सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

# जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 • अंक 2-3 • मई -जून 2022 • मूल्य : 20 रु.

## उपाध्याय गणि पदारोहण

पू. उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म.

पू. गणि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.

# बाडमेर में पूज्य गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में पदारोहण संपन्न

वर्धमान विद्या मंत्र
श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड़, तिरुपातुर

स्वर्णमाला
श्री छगनलालजी मेवारामजी धीया, सूरत

गरु पूजन
श्री विरदीचंदजी धारिवाल परिवार, सनावड़ा-बाड़मेर-सूरत

## उपाध्याय गणि पदारोहण

आसन
श्री बाबूलालजी वंशीधरजी संकलेचा, बाड़मेर

वासकुंपा
श्रीमती उदीदेवी मांगीलालजी धारिवाल, बाड़मेर

नामकरण : श्री पन्नालालजी गौतमचन्दजी कवाड़, तिरुपातुर
श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, सूरत

वर्धमान विद्या यंत्र
श्री भंवरलालजी
विरदीचंदजी छाजेड़,
बाड़मेर

स्वर्णमाला
संघवी पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर

गुरु पूजन
श्री तेजराजजी धुड़ाजी कांकरिया, महावीरजी कांकरिया, सिवाना-डुबली (संसारिक परिवार)

कामली
श्री गौतमचंदजी भगवानदासजी बोहरा, बाड़मेर

आसन
श्री जीवराजजी ऊकचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचोर

वासकुंपा
श्री बाबुलालजी टी. बोथरा, बाड़मेर

# बाडमेर में पूज्य गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में पदारोहण संपन्न

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री

गुरु भगवंत

कर्ण पूजन

कर्ण पूजन

पदधारक मुनि

मंत्र अर्पण

मंत्र अर्पण

उद्‌बोधन

प्रतिष्ठा महोत्सव समिति द्वारा कामली

प्रतिनिधि सभा द्वारा कामली

साध्वी समुदाय

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥

॥ श्री जिनदत्त–मणिधारी–कुशल–चन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः॥

## छाजेड़ों की नगरी

# श्री डूठारिया नगर में

## भव्य चातुर्मासार्थ प्रवेशोत्सव प्रसंगे भावभरा हार्दिक आत्मीय आमंत्रण

**दिव्याशीष**

प.पू. प्रज्ञापुरुष आचार्य सम्राट गुरुदेव
**श्री मज्जिन कान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा.**

प.पू. महातपस्वी मुनिराज
**श्री प्रतापसागरजी म.सा.**

**आज्ञा प्रदाता**

प.पू. अवंती तीर्थोद्धारक स्वरतरगच्छाधिपति
**आचार्य सम्राट**
**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा**

## पावन निश्रा

प.पू. प्रज्ञा–पुरुष आचार्य सम्राट गुरुदेव श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

**प.पू. 'वसीमालाणी रत्न शिरोमणि' 'ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक' "संघ एकता सूत्रधार"**

## आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वर जी म.सा.

## पूज्य मुनि नयज्ञसागरजी म.सा.

## पावन सानिध्य

प.पू. धवल यशस्वी आर्यारत्ना **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.** की सुशिष्या

प. पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा., प.पू साध्वी श्री जयरत्ना श्री जी म.सा.,
प.पू. साध्वी श्री नूतनप्रिया श्री जी म.सा., पू. साध्वी श्री तत्वज्ञलता श्री जी म.सा.,
प. पू. साध्वी श्री पर्वप्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

## मंगल प्रवेश

**संवत् 2079 आषाढ़ सुदि 10, दिनांक 9 जुलाई 2022, शनिवार**

प्रवेश के दिन स्वामीवात्सलय के लाभार्थी

**शा. चाँदमलजी राणमलजी छाजेड़**

Firm : M M Medical Corporation Chennai

**✣ विनीत ✣**

**श्री आदेश्वर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक ट्रस्ट डुठारिया**

पो. डुठारिया जिला पाली (राजस्थान)

संपर्क : अशोक कुमार छाजेड़ : 94440 77933

# श्री नंदुरबार नगरे
# चातुर्मास प्रवेश आमंत्रण

## प्रवेश अभिनन्दन
**9 जुलाई 2022**
आषाढ़ सुदि 10

**दिव्याशीष**

पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य प्रवर
**श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.**

**आज्ञा प्रदाता**

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

**पावन निश्रा**

पूज्य विपुल साहित्य सर्जक उपाध्याय **श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.**

पूज्य मुनिराज श्री समयप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म.सा.

**पावन सानिध्य**

पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या

पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विपुलप्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री कृतार्थप्रभाश्रीजी म.सा.

**निवेदक**

**श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ नंदुरबार**

**चातुर्मास स्थल**

**श्री मणिधारी आराधना भवन दादावाड़ी नंदुरबार**

सम्पर्क सूत्र : 9270702121, 9822650428, 9422789201

|| श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः|| श्री आदिनाथाय नमः || श्री महावीरस्वामिने नमः||

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतम स्वामिने नमः

खरतरबिरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः

पूज्य गणनायक श्री सुखसागर–भगवान–जिनहरि–जिनकांतिसूरि गुरुभ्यो नमः

# अतुल्य श्री शत्रुंजय महातीर्थे

पू. आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म. की स्मृति में निर्मित

# श्री जिनहरि विहार धर्मशाला

**चातुर्मास में पूज्य गुरु भगवंतों की वेयावच्च एवं पर्युषण महापर्व की सामूहिक आराधना के आयोजन में लाभ लेने का अनमोल अवसर**

## आराधना हेतु सकल श्रीसंघ को भावभरा निमंत्रण

**दिव्य कृपा**

पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पूज्य कविसम्राट आ. श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पूज्य युगप्रभावक आ. श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा.



**आज्ञा प्रदाता एवं मार्गदर्शक**

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर

**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

**शुभ निश्रा**

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

पू. मुनिराज श्री मौनप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनिराज श्री मोक्षप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनिराज श्री मननप्रभसागरजी म.सा.

**पावन सानिध्य**

पू. समतामूर्ति श्री पवित्रश्रीजी म. की शिष्या पू. खान्देश शिरोमणि महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

पू. बंगदेशोद्धारिका प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की निश्रावर्तिनी पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा

पू. प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा

पू. छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणि महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा

पू. साध्वी सुरेखाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री शांतरेखाश्रीजी म.

**श्री पालीताणा महातीर्थ में चतुर्विध श्रीसंघ की भक्ति का अपूर्व लाभ**

- शत्रुंजय महातीर्थ के अनेक जिन मंदिरों के दर्शन व पूजन का लाभ...
- आठों दिन पूजा, प्रवचन, आंगी, रोशनी, भक्तिभावना का कार्यक्रम होगा...
- आठों दिन गुरुभगवंतों के मुख से अष्टाह्निका प्रवचन एवं कल्पसूत्र श्रवण का अद्भुत लाभ...
- सभी आराधकों के लिए, आयंबिल, एकासणा, बियासणा, गरम पानी आदि की समुचित व्यवस्था...
- लाभार्थी पुण्यशालियों के निवास के लिए पर्युषण पर्व की आराधना हेतु 1 रुम ( अधिकतम 5 सदस्य ) की व्यवस्था रहेगी



## लाभ लेने हेतु नकरा 51000 (इक्यावन हजार रुपये मात्र)

| उत्तर पारणा | पर्युषण महापर्व आराधना | मणिधारी गुरुदेव स्वर्गारोहण | भगवान महावीर जन्म वांचन | संवत्सरी महापर्व |
|---|---|---|---|---|
| 23-8-2022 | 24-8-2022 | 26-8-2022 | 28-8-2022 | 31-8-2022 |

अध्यक्ष: संघवी श्री विजयराजजी डोसी-बैंगलोर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष: संघवी श्री अशोककुमारजी भंसाली-अहमदाबाद, उपाध्यक्ष: श्री रतनलालजी हालावाला-अहमदाबाद

मानद मंत्री:- श्री बाबुलालजी लूणिया-अहमदाबाद, मंत्री:- श्री जमराजजी छाजेड़-इचलकरंजी, कोषाध्यक्ष:- श्री पुखराजजी तातेड़-अहमदाबाद, महाकोषाध्यक्ष:- संघवी श्री भंवरलालजी मंडोवरा-अहमदाबाद,

मानद सदस्य:- संघवी श्री कुशलराजजी गुलेच्छा-बैंगलोर, संघवी श्री ... लालवाणी-अहमदाबाद, श्री ... झाबक-रायपुर, श्री ... टांक-चेन्नई, श्री अरविन्दजी श्रीश्रीमाल-मुम्बई, श्री ... गुलेच्छा-... श्री ... जैन-मुम्बई, श्री ... कोठारी-नागौर, श्री प्रकाशजी सुराणा-रायपुर, श्री ... कांकरिया-रायपुर, श्री बाबुलालजी छाजेड़-मुम्बई, श्री प्रमोदकुमारजी चोपड़ा-रायपुर, श्री ज्ञानचंदजी कोठारी-दुर्ग, श्री ... लोढ़ा-कोलकाता, श्री ... चौरड़िया-कोलकाता, श्री ... पारख-बैंगलोर, श्री बाबुलालजी बोथरा-अहमदाबाद, श्री ... गुलेच्छा-... श्री ... संचेती-जयपुर, श्री बाबुलालजी ...-... संघवी श्री रतनलालजी बोथरा-अहमदाबाद, श्री ... बोहरा-अहमदाबाद, श्री ... -अहमदाबाद, श्री ... -मालेगांव, श्री ... -... श्री अशोककुमारजी बोहरा-अहमदाबाद, श्री ... शाह-भुज, श्री ... बोहरा-अंकलेश्वर

**विनीत : श्री जिनहरि विहार समिति-पालीताना, तलेटी रोड पो. पालीताना-364270 जिला-भावनगर (गुजरात)**

फोन- 02848-252653, मो. 9427063069, संपर्क- संघवी विजयराज डोसी- 9343731869, बाबुलाल लूणिया-9426002186

**आगम मंजूषा**

भगवान महावीर

**सव्वे पाणा पियाउया सुहसाया।**
**दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीवणो**
**जीविउकामा सव्वेसिं जीवियं पियं।**

सब प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सुख अनुकूल है, दु:ख प्रतिकूल है, वध अप्रिय है, जीवित रहना प्रिय है। सब जीवन के इच्छुक हैं और सबको अपना जीवन प्रिय होता है।

All living beings love their life. For them happiness is desirable; unhappiness is not desirable. Nobody likes to be killed. Everybody is desirous of life. Everyone loves his own life.

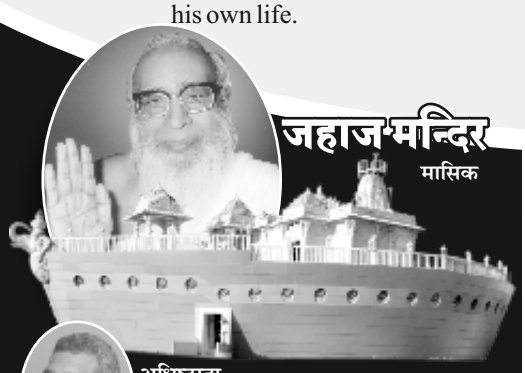

# जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

वर्ष : 19 अंक : 2-3 5 जून 2022 मूल्य 20 रू.

**अध्यक्ष - उत्तमचंद रांका, चैन्नई**

**प्रधान संपादक : डॉ. यू.सी. जैन**



जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है


**सदस्यता शुल्क**

| | | |
|---|---|---|
| संस्था संरक्षक | : | 21,000 रूपये |
| मानद संरक्षक | : | 11,000 रूपये |
| 15 वर्षीय सदस्यता | : | 2500 रूपये |
| 12 वर्षीय सदस्यता | : | 2000 रूपये |
| 6 वर्षीय सदस्यता | : | 1000 रूपये |
| त्रिवार्षिक सदस्यता | : | 500 रूपये |
| वार्षिक सदस्यता | : | 200 रूपये |

**सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि**
**ICICI की किसी भी शाखा में**
**SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST**
**BANK - ICICI JALORE**
**ACCOUNT NO. 065301000256**
**IFSC CODE - ICIC0000653**
रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।


**सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक**

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर ( राज. )

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org


## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. नवप्रभात | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 08 |
| 2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1 | हम्पी ( दादावाड़ी ) | 09 |
| 3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1 | होस्पेट ( दादावाड़ी ) | 10 |
| 4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 12 |
| 5. विहार डायरी | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 13 |
| 6. लूणिया गोत्र का इतिहास | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 14 |
| 7. अधूरा सपना | पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. | 15 |
| 8. साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी की समाधि | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 16 |
| 9. मृत्यु हो तो ऐसी | उपाध्याय मनितप्रभसागरजी म. | 18 |
| 10. गुरु तराशकर तारणहार बनाता है... | साध्वी प्रमुदिताश्रीजी म. | 20 |
| 11. समाचार दर्शन | संकलित | 22-52 |
| 12. संस्था संरक्षक सूचि | | 53 |
| 13. संरक्षक सूचि | | 54-57 |
| 14. जटाशंकर | आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. | 58 |


## विशेष दिवस

9 जून श्री वासुपूज्यस्वामी च्यवन कल्याणक

11 जून श्री सुपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक

12 जून श्री सुपार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक

14 जून पाक्षिक प्रतिक्रमण

17 जून श्री आदिनाथ च्यवन कल्याणक

19 जून श्री विमलनाथ मोक्ष कल्याणक

22 जून श्री नमिनाथ दीक्षा कल्याणक, आम त्याग, आर्द्रा नक्षत्र 11:44 (दोपहर)

26 जून रोहिणी

27 जून पाक्षिक प्रतिक्रमण

29 जून पुष्य नक्षत्र प्रारंभ रात्रि 1:01 से

30 जून पुष्य नक्षत्र समाप्त रात्रि 2:21

4 जुलाई उपा. लब्धिमुनि पुण्यतिथि

5 जुलाई भगवान महावीर च्यवन कल्याणक, चौमासी अठाई प्रारंभ

10 जुलाई श्री जिनदत्तसूरि पुण्यतिथि अजमेर

13 जुलाई चातुर्मास प्रारंभ

**विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407**

एक वाक्य पढ़ा था-

व्यक्ति को अनचाही घटनाऐं व अनचाहे लोगों को दिल में रखना चाहिये। उन्हें दिमाग में कभी नहीं रखना चाहिये।

यह वाक्य बडा गहरा है। परमात्मा का विज्ञान कहता है- अनचाहे व्यक्ति व घटनाऐं न तो दिल में रखने चाहिये, न दिमाग में!

क्योंकि ऐसी स्थितियाँ कषाय की निमित्त बन जाती है।

लेकिन यह इतना आसान नहीं है। क्योंकि व्यक्ति को दोनों स्थितियाँ मिलती ही है। प्रसन्न कर देने वाली घटनाऐं भी जीवन में घटती हैं। और मन मानस को बेचैन कर देने वाली घटनाऐं भी घटती हैं।

इसी प्रकार दोनों प्रकार के व्यक्तियों से भी व्यक्ति का व्यवहार होता ही है।

मनोविज्ञान कहता है- व्यक्ति के ८० प्रतिशत विचार नकारात्मक होते हैं। क्योंकि इच्छित स्थितियों व व्यक्तियों को व्यक्ति भूल जाता है। पर अनिच्छित स्थितियों व व्यक्तियों को भुला पाना आसान नहीं है।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति को चाहिये कि वह कुछ बातें दिल में स्टोर करें और कुछ बातें दिमाग में!

दिल और दिमाग का अन्तर समझ लेना है।

दिमाग का हिस्सा हमेशा सक्रिय रहता है। वह उस अनुसार गतिविधियाँ करता है। दिमाग का खजाना उसकी हर गतिविधि को प्रभावित करता है।

यदि अनिच्छित घटना व व्यक्ति को वह दिमाग में रखता है तो उसकी दिनचर्या, उसकी भाषा, उसका व्यवहार उसी आधार पर होता है। वह नकारात्मकताओं से भर जाता है। उसकी हर क्रिया में नकारात्मकता नजर आती है। यह नकारात्मकता प्रगति का सबसे बडा रोडा है।

अपनी नकारात्मकता को दूर करना जरूरी है। दिमाग में वे घटनाऐं व व्यक्ति होने चाहिये जो उसे सदा-सदा प्रसन्न रखे। सकारात्मक होने का यह उपाय जीवन की प्रगति का आधार है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 31

# हम्पी (दादावाड़ी)

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

रत्नकूट के शिखर पर, हम्पी पुर का ठाट।
राजचन्द्र आश्रम बड़ा, है भारत विख्यात ।।
ध्यान साधना के लिये, है यह उत्तम स्थान।
बैठ कन्दरा में लहो, निज आतम भगवान् ।।
वर्षों तक की साधना, योगी सहजानंद।
ऊर्जा मंडित तीर्थ यह, पूजे सूरज चंद ।।
पद्मासन मुद्रा स्थिता, प्रतिमा राजित अत्र।
महिमा दादा दत्त की, यत्र तत्र सर्वत्र ।।
चरणपादुका भी यहाँ, देती आत्म प्रकाश।
सीखो जीने की कला, दादा गुरु के पास।।

प्राचीन काल से भारतवर्ष में जैन धर्म का विशिष्ट प्रभुत्व रहा है। आत्म-प्रगति के सूत्र न केवल शाश्वत आनन्द के माध्यम बनते हैं, बल्कि सामाजिक, पारिवारिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में भी उनका उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है।

कर्नाटक प्रान्त में हॉस्पेट नगर के समीपस्थ स्वनाम प्रसिद्ध हम्पी आध्यात्मिक साधना का केन्द्र रहा है। प्राचीन अवशेषों, खण्डहरों में पूर्व में यहाँ 150 जैन मंदिर होने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं, जिनकी झलक वर्तमान में स्थित जीर्ण-शीर्ण मंदिरों से प्राप्त हो जाती है।

यह क्षेत्र रत्नकूट के नाम से प्रसिद्ध है। खुदाई में बहुत-सी जैन प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं, जो कमलापुर म्यूजियम तथा अन्य स्थानों पर प्रदर्शित की हुई हैं। अध्यात्म, साधना एवं शिल्पकला का यह महत्वपूर्ण क्षेत्र वर्ल्ड हेरिटेज केन्द्र के रूप में घोषित तथा संरक्षित है।

मुख्य मार्ग से कुछ कदम भीतर श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम बना हुआ है, जिसकी स्थापना लगभग 1960 में हुई थी। यह आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र है। प्राचीन गुफा में छोटा-सा कक्ष निर्मित है, जिसमें चन्द्रप्रभस्वामी की चल प्रतिमा स्थित है। तीन-चार पंचधातु की प्रतिमाएँ हैं।

दादावाड़ी एक अलग परिसर में निर्मित है। श्रीमद् राजचन्द्र एवं श्री सहजानंद गुरु मंदिर के पास में ही दादावाड़ी अवस्थित है। विशाल हॉल में दादा गुरुदेव की जिनदत्तसूरीश्वर जी म.सा. की सफेद मार्बल की 36।। की प्रतिमा विशाल कमलाकार आसन पर आसीन है। पूरे भारत में ऐसी प्रतिमा कहीं भी नहीं है।

यहाँ की गुफाओं में योगीराज सहजानंदजी एवं माताजी धनदेवी ने साधना की थी।

इस प्रतिमा का निर्माण योगीराज श्री सहजानंद जी ने स्वयं की उपस्थिति में एवं अपने मार्गदर्शन में करवाया

है। दादावाड़ी में अष्टकोणीय दो चरण पादुकाएँ हैं। दोनों पादुकाओं में दो-दो जोड़ी चरण हैं।

एक पाषाण खण्ड में युगप्रधान दादा श्री जिनदत्तसूरि जी एवं मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि जी के और दूसरे पाषाण खण्ड में श्री जिनकुशलसूरि जी एवं श्री जिनचन्द्रसूरि जी के चरण-चिह्न अंकित हैं।

यहाँ चरणों का ही नियमित पक्षाल होता है। प्रतिमा का पक्षाल माह में मात्र एक बार शुक्ला त्रयोदशी को होता है।

दीपावली के तीन दिन 72 घंटे तक अखण्ड भक्ति का कार्यक्रम होता है। ऊर्जा केन्द्र होने से श्रद्धालुओं का आना-जाना बना रहता है। पर्युषण के दिनों में 500 लोगों की उपस्थिति होती है, जो दूर-दूर से चलकर आते हैं।

वर्ष भर में लगभग दादा गुरुदेव के 100 से अधिक पूजन होते हैं। गुरु पूर्णिमा, भाद्रपद शुक्ला 10, श्रावण शुक्ला 10 एवं पौष शुक्ला दूज को मेले का आयोजन होता है, जिसमें बाहर से भारी संख्या में लोग भक्ति का लाभ उठाते हैं। दीपावली, 2005 को चन्द्रप्रभ स्वामी की प्रतिमा से अमीझरणा हुआ था।

यहाँ साधु-साध्वी हेतु उपाश्रय, प्रवचन हॉल आदि की सुविधा है। नि:शुल्क भोजनशाला की कायमी व्यवस्था है। पूर्व सूचना देने पर लगभग 500 व्यक्तियों के प्रवास की व्यवस्था हो सकती है। इसी प्रकार आयंबिल की भी व्यवस्था हो जाती है।

शांत, एकांत, नीरव वातावरण व्यक्ति को प्रभु भक्ति में जुड़ने में महत्वपूर्ण कड़ी का काम करता है। नि:संदेह यह आश्रम आत्मशान्ति एवं ऊर्जा प्राप्ति का महान् स्त्रोत है।

---

पता : **श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम,**
रत्नकूट, हम्पी- 583201 जिला : बल्लारी (कर्नाटक) दूरभाष - 08394-241254, 395850

## मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 32

लौह शैल के नाम से, है यह शहर प्रसिद्ध।
हॉस्पेट शुभ नाम है, अपरम्पर है रिद्ध ।।
दादावाडी है यहाँ, मंदिर भी है साथ ।
आदिनाथ है मध्य में, बांये पारसनाथ ।।
दायें दादावाटिका, मध्य दत्त गुरुदेव।
दांये सूरि राजेन्द्र है, बांये शांति सुरसेव ।।
दत्तसूरि गुरुदेव की, प्रतिमा आलीशान ।
दर्शन से पावे सहु, आनंद अक्षय स्थान ।।

अयस्क नगरी के नाम से भारत में प्रसिद्ध हॉस्पेट हालांकि बहुत बड़ी नगरी नहीं है, परन्तु आस्था और भक्ति के संदर्भ में बड़े-बड़े नगरों को मात देती है।

श्री आदिनाथ जिनमंदिर के खुले-विशाल प्रांगण में मंदिर से सटी हुई दादावाड़ी अपने आप में एक इतिहास है, जहाँ सम्प्रदाय-समन्वय का जीता-जागता उदाहरण प्रस्तुत हुआ है।

दादावाड़ी में त्रिगड़े में मूलनायक के रूप में लाखों की श्रद्धा के पावन धाम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी म.सा. विराजमान है। दादा गुरुदेव के दाहिनी बाजू राजेन्द्रसूरि जी एवं बायीं बाजू शांतिसूरि जी विराजमान है। गुरुदेव की तीनों छतरियों पर अलग-अलग ध्वजाएँ हैं।

जिस प्रकार सितारों के मध्य चन्द्रमा राजा की भांति सुशोभित होता है उसी तरह दो संतों के मध्य प्रतिष्ठित दादा गुरुदेव प्रतीत होते हैं।

गुरुदेव की श्वेत मार्बल में निर्मित 17'' चौड़ी प्रतिमा अत्यन्त प्रभावक है। दर्शन करने से मन का कण-कण खिल उठता है। इस दादावाड़ी का निर्माण वि. सं. 2047 में हुआ।

परिसर के ठीक मध्य में आदिनाथ परमात्मा का शिखरबद्ध भव्य जिनालय है, जिसमें शंखेश्वर पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी की नयनरम्य प्रतिमा विराजमान है। मंदिर में श्री नाकोड़ा भैरव एवं पद्मावती देवी की प्रतिमा विराजमान है। यहाँ वि.सं. 2015 में छोटा मंदिर बना था, फिर उसका आकार बड़ा हुआ और वि.सं. 2047 में पुनर्प्रतिष्ठा हुई।

वृक्षों की हरियाली एवं छांव से युक्त परिसर में ही कमरे हैं एवं टिन-शेड में महावीर विद्यालय चलता है।

उपाश्रय, भोजनशाला आदि की व्यवस्था दादावाड़ी से 1/2 कि.मी. दूरी पर मूल शहर में है।

निश्चित रूप से यह दादावाड़ी श्रद्धालुओं के लिये जीवन निर्माण का केन्द्र है, आत्म-कल्याण का धाम है।

हॉस्पेट नगर के समीपस्थ स्थित साधना भूमि हम्पी तीर्थ के दर्शन अत्यन्त रमणीय हैं, जो 12 कि.मी. दूर है।

पता :

**श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं जिनदत्तसूरि दादावाड़ी**

मज्ल्लगी टूरिस्ट होम के सामने, बल्लारी रोड़, होसापेटे-583 201(कर्नाटक) दूरभाष : 08394-222766

## खरतरगच्छ युवा परिषद की नूतन राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठित

बाडमेर 8 मई। पू. अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में बाडमेर नगर में प्रतिष्ठा महोत्सव एवं पदाभिषेक महोत्सव में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की नूतन राष्ट्रीय कार्यकारणी गठित की गयी।

नूतन राष्ट्रीय कार्यकारणी इस प्रकार है-

राष्ट्रीय सलाहकार:- पदमजी टाटिया (चेन्नई), कुशलजी गोलेच्छा (बंगलोर), अशोकजी भंसाली (अहमदाबाद), रतनजी बोथरा (दिल्ली), पदमजी बरडिया (दुर्ग), राकेशजी बोहरा (उज्जैन)

कार्यकारणी समिति- राष्ट्रीय चेयरमेन- सुरेशजी भंसाली (रायपुर), राष्ट्रीय अध्यक्ष- सुरेशजी लूनिया (चेन्नई), वरिष्ठ उपाध्यक्ष- प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल (मुम्बई), उपाध्यक्ष- पुरुषोत्तमजी सेठिया (बालोतरा), उपाध्यक्ष- प्रवीणजी लूणिया (सूरत), महामंत्री- रमेशजी लुंकड (इचलकरंजी), कोषाध्यक्ष- ललितजी डाकलिया (बैंगलोर), सहमंत्री- गौतमजी मालू (सूरत), सहकोषाध्यक्ष- नरेशजी लुणिया (बाडमेर), प्रचार प्रसार मंत्री- शुभमजी भंसाली (अक्कलकुवा), संघठन मंत्री- चंपालालजी वाघेला (मुंबई)।

प्रदेशाध्यक्ष- पश्चिम राजस्थान- रमेशजी मालू (बाडमेर), पूर्वी राजस्थान- राजीवजी खजांची (बीकानेर), दिल्ली- मनोजजी सेठिया (दिल्ली), महाराष्ट्र- नरेशजी संकलेचा (रामा- कल्याण), खान्देश- मनोजजी डागा (अक्कलकुवा), छत्तीसगढ- प्रवीणजी बोहरा (दुर्ग), तमिलनाडु- दीपकजी नाहटा (कोयम्बतूर)।

प्रकोष्ठ चैयरमैन- स्वाध्याय- ललितजी कवाड तिरपातुर, व्यक्तित्व विकास- संतोषजी वडेर (दुर्ग), वैय्यावच- भेरुचंदजी लुणिया (अहमदाबाद), सुरक्षा- राजेंद्रजी सेठिया (धोरीमन्ना)। -शुभम भंसाली (प्रचार-प्रसार मंत्री)

77

# ऐसे थे मेरे गुरुदेव

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

पालीताना के इस ऐतिहासिक सामूहिक चातुर्मास के पश्चात् पूज्यश्री ने बाडमेर की ओर विहार किया। बाडमेर में जैन समाज की बडी बस्ती है। सभी मंदिरमार्गी हैं। पूर्व परम्परा से वहाँ पूरा समाज गोत्रों के आधार पर दो गच्छों में बंटा हुआ है।

वि. सं. 2018 के काल खण्ड की यह चर्चा है। उस समय पंथवाद का वातावरण बाडमेर के अमृत-वायुमंडल में विष घोलने का काम कर रहा था।

आगेवान व्यक्तियों की घबराहट उनके वार्तालाप में प्रकट हो रही थी। उन्होंने पालीताना में बिराजमान स्वगच्छीय समस्त मुनिवरों से अत्यन्त नम्र स्वरों में बाडमेर पधारने की प्रार्थना की थी। कारण स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था- ''बाडमेर संघ के वातावरण में समस्याऐं उपस्थित होने वाली हैं। समूचा संघ मंदिरमार्गी है। और वहाँ इन दिनों मंदिर-विरोधी स्थितियाँ उपस्थित हो रही है। वे लोग अपने तर्कों के आधार पर पूरे समाज को मंदिर-विरोधी बना देना चाहते हैं।''

हमें ज्ञात हैं कि लगभग 500 परिवार इस मान्यता को अंगीकार करने की स्वीकृति दे चुके हैं। यदि 500 परिवार मंदिर विरोधी बन जाते हैं तो फिर पीछे क्या बचेगा! धीरे-धीरे पूरा संघ उस चपेट में आ जायेगा।

कृपा कीजिये और बाडमेर की क्षेत्र स्पर्शना कीजिये। हमें बचाना आपका कर्त्तव्य भी है और उत्तरदायित्व भी! क्योंकि हम सभी आपके अनुयायी हैं। हमारी रक्षा आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा!''

उस समय वहाँ बिराजमान थे पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री कवीन्द्रसागरजी म.सा.! उन्होंने पूज्य गुरुदेवश्री को कहा कि तुम्हें बाडमेर जाना है। तुम इस स्थिति को बहुत अच्छी तरह सम्हाल सकते हो। क्योंकि जिस पंथ के लोग वहाँ प्रचार करने में लगे हैं, तुम उसी पंथ से आये हो। तुम बहुत अच्छी तरह उस पंथ को, उसकी गतिविधियों को जानते हो। तुम्हें जाना ही होगा।

पूज्यश्री ने वहाँ से विहार किया। लक्ष्य बाडमेर का था। विहार लम्बा था। वहाँ पहुँचने में देरी समस्या को विस्तार दे सकती थी। इसलिये पूज्य गुरुदेवश्री ने उग्र विहार किया। पालीताना से मात्र 18 दिनों की पद यात्रा! और पधार गये बाडमेर!

बाडमेर का वह घटनाक्रम अपने आप में एक इतिहास है। 15 से 20 दिनों तक चला वाद-विवाद इतिहास के पन्नों में विस्तार से अंकित है। 500 परिवारों को अपने मंदिर-विरोधी पंथ में सम्मिलित करने आये थे, पर पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों का परिणाम यह रहा कि एक भी व्यक्ति ने अपनी परम्परा का त्याग नहीं किया। बल्कि समूचा समाज अत्यन्त दृढ़ हो गया।

बाडमेर समाज यह उपकार कभी भूल नहीं सकता। आज भी बुजुर्ग लोगों के मन मस्तिष्क में वह घटनाक्रम तरोताजा है।

बाडमेर श्रीसंघ से पूज्य गुरुदेवश्री का यह पहला परिचय था। यह पहला परिचय ही इतना घनिष्ठ हो गया कि लोग पूज्यश्री को बाडमेर के कहने लग गये।

वि. सं. 2019 का चातुर्मास बाडमेर में किया। चातुर्मास से पूर्व पूज्य गुरुदेवश्री चौहटन पधारे। जहाँ उस समय संघ में जो परस्पर विवाद चल रहा था, पूज्य गुरुदेवश्री के समन्वयकारी प्रवचनों से समाप्त हो गया।

(शेष पृष्ठ 49 पर)

128

# विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

(गतांक से...)

चातुर्मास काल में श्री संघ ने उपधान कराने की अपनी भावना व्यक्त की थी। स्थान भायखला तय किया गया। पहले ऐसा चिंतन किया गया था कि उपधान का आयोजन चातुर्मास काल में ही हो जाय। किन्तु व्यवस्थाओं आदि की दृष्टि से निश्चित किया गया कि उपधान चातुर्मास पश्चात् आयोजित हो।

भायखला ट्रस्ट से वार्तालाप किया गया। उपधान तप आयोजन समिति का गठन हुआ। संघवी श्री पुखराजजी छाजेड इसके संयोजक बने। लगभग 100 तपस्वी आराधना से जुडे।

भायखला में दो महिनों का प्रवास आह्लादकारी रहा। भायखला तीर्थ के इतिहास के पृष्ठ पूर्व में विहार डायरी में अंकित किये जा चुके हैं। उपधान तप का प्रारंभ मिगसर सुदि 7 रविवार ता. 30 नवम्बर 2003 से हुआ। जबकि माला विधान माघ वदि 11 रविवार ता. 18 जनवरी 2004 को संपन्न हुआ।

प्रतिदिन प्रवचन जिन मंदिर के बाहर के विशाल मंडप में होता था। तपस्वियों के अलावा आसपास सोसायटी में निवास कर रहे श्रावकों का बडी संख्या में आना होता था। संख्या प्रायः 500 से अधिक ही रहती थी। विशाल मंडप खचाखच भरा रहता था।

वहाँ के दो श्रावकों ने एकान्त में आकर कहा–

महाराज साहब! आपके प्रवचन में बहुत श्रावक आना चाहते हैं। पर आप द्वारा ध्वनिवर्धक यंत्र का उपयोग करने के कारण वे नहीं आ पाते हैं। हमारा निवेदन है कि दो चार दिन आप इसका उपयोग न करके देखें। यहाँ के लोगों को धर्म का बहुत लाभ होगा। आपकी आवाज वैसे भी बुलन्द है।

उपधान प्रारंभ हुए अभी चार पांच दिन ही बीते थे। हमने उन श्रावकों का कथन स्वीकार कर माइक का उपयोग बंद कर दिया। प्रवचन में श्रावकों की संख्या दोगुनी हो गई। हाँलाकि आवाज को तीव्र करना पड रहा था। पर हमने इसे स्वीकार किया।

सुबह शाम उपधान की क्रिया होती। क्रिया सामूहिक होती। तपस्वी क्रिया के पदों का सस्वर उच्चारण करते। इस दृश्य को देखने बडी संख्या में श्रद्धालुओं का आना होता। वे कहते भी कि उपधान तो हमारे यहाँ बहुत हुए। पर इस प्रकार की क्रिया का वातावरण पहली बार हम देख रहे हैं।

उपधान तप की आराधना आंनद पूर्वक चली। व्यवस्थाओं का पूरा दायित्व संघवी श्री पुखराजजी छाजेड ने सम्हाला था। सहसंयोजक श्री बाबुलालजी छाजेड व बाबुलालजी मरडिया थे। खरतरगच्छ संघ के आगेवानों का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त था। इस उपधान तप की आराधना से मुंबई में गच्छ की जाहोजलाली का एक अनूठा वातावरण निर्मित हुआ था।

(शेष पृष्ठ 52 पर)

गोत्र इतिहास
37

# लूणिया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

लूणिया गोत्र का इतिहास बडा ही रोमांचक है। इस गोत्र का निर्माण वि. सं. 1192 में हुआ। भूभाग पर विचरण कर रहे प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि के प्रतिबोध व उनकी साधना के चमत्कार के परिणाम स्वरूप इस गोत्र की उत्पत्ति हुई थी।

इस गोत्र का प्रादुर्भाव माहेश्वरी जाति से हुआ है। वि. सं. 1192 में माहेश्वरी हाथी शाह अथवा धींगेडमल मँदडा मुल्तान नगर में रहते थे। वे वहाँ के राजा के दीवान थे। दयालु प्रकृति के श्री हाथी शाह का समूची प्रजा बहुत सम्मान करती थी। उनके पुत्र का नाम लूणा था।

उपलब्ध इतिहास के अनुसार दीवान हाथीशाह के पुत्र लूणा को सर्प ने काट खाया। लूणा के पूरे शरीर में सर्प का जहर खतरनाक रूप से चढ गया।

परिवार अत्यन्त परेशान हो उठा। तांत्रिकों की विधियाँ व झाड फँक वालों की कारगर न हो सकी। लूणा मृत्यु का साक्षात्कार जैसे करने लगा।

तभी एक श्रावक ने कहा- अपने नगर में साक्षात् कल्पवृक्ष समान आचार्य जिनदत्तसूरि पधारे हुए हैं। वे बहुत बडे साधक हैं। उनकी कृपा से ही अब तो पुत्र लूणा बच सकता है।

गुरुदेव से विनंती की तो उन्होंने लूणा को वहीं सुलाया, जहाँ सोते लूणा को सर्पदंश हुआ था। गुरुदेव की साधना का चमत्कार सब विस्फारित नयनों से निहार रहे थे।

तभी कक्ष में जैसे चमत्कार हुआ। और जिस सर्प ने काटा था, वही सर्प गुरुदेव की विद्या के प्रभाव से प्रकट हुआ। गुरुदेव ने कहा- अपना विष वापस लो।

सर्प मनुष्य की भाषा बोलते हुए कहने लगा- हे गुरुदेव! इसके साथ मेरा पूर्व जन्म का वैर है। इसलिये मैंने इसे डंसा है। इसने मुझे पूर्व भव में यज्ञ की वेदी पर होम दिया था। इसलिये मैंने बदला लिया।

गुरुदेव ने उस सर्प को समझाते हुए कहा- बदला समाधान नहीं है। बदला तो निरन्तर चलने वाली... कभी खत्म न होने वाली क्रिया है।

इसलिये बदले की बात छोडो। फिर तुमने डंस कर बदले का अपना प्रण पूरा कर लिया है। अब मेरी बात मानो और इस व्यक्ति की काया से जहर वापस चूस लो। ताकि इसे अभयदान मिल जाये।

सर्प ने गुरुदेव की आज्ञा का पालन किया। लूणा जीवित हो उठा। गुरुदेव की कृपा का साक्षात् अनुभव किया। वह भक्त बन गया। गुरुदेव ने उसे वीतराग परमात्मा के धर्म का बोध दिया। सुनकर लूणा सच्चा श्रावक बना। गुरुदेव ने लूणा को जैन धर्म में दीक्षित कर लूणिया गोत्र की स्थापना कर उसे ओसवाल कुल में सम्मिलित किया।

राजस्थान के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के ग्रन्थागार में एक हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध है, जिसका नाम है- इतिहास ओसवंश! इस ग्रन्थ से इस कथा की पुष्टि होती है।

नाहर ग्रन्थागार में उपलब्ध 'अथ महाजनां री जातां रौ छन्द' जो मथेन अमीचंद द्वारा रचित है, में भी इस कथानक की पूर्ण रूप से पुष्टि होती है।

अठारहवीं शताब्दी के महान् विद्वान् संत, सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के संस्थापक, भाषा में स्नात्र पूजा की सर्वप्रथम रचना करने वाले, द्रव्यानुयोग के प्रौढ विद्वान् श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज इसी लूणिया गोत्र के रत्न थे।

पूज्यपाद महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. की निश्रा में इसी लूणिया खानदान के सेठ तिलोकचंदजी लूणिया ने शत्रुंजय के विशाल छह री पालित संघ का आयोजन किया था। और सिद्धाचल की यात्रा जो अंगारशाह पीर के उपद्रवों के कारण बंद हो गई थी। उन्होंने प्रारंभ करवाई थी।

कालान्तर में लूणिया परिवार मुलतान से फलोदी आ गये। बाद में फलोदी से अन्यत्र कई स्थानों पर बसे। सेठ तिलोकचंदजी लूणिया को ग्वालियर के सिंधिया सरकार ने अपने खजाने का पोद्दार बनाया था। आपने शत्रुंजय तीर्थ पर मंदिर व धर्मशाला का निर्माण करवाया था।

इनके पुत्र श्री थानमलजी लूणिया जो बाद में हैदराबाद में जाकर बस गये, उनको वहाँ की निजाम सरकार ने राय बहादुर के खिताब से सम्मानित किया था।

धारावाहिक
कथा
21

# अधूरा सपना

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

(गतांक से आगे)

बहिन सुन्दरी के आग्रह से तंबू उतार दिये गये। दो तम्बू की व्यवस्था की गयी। एक में पुरुष वर्ग एवं एक में महिलावर्ग! ज्यों-ज्यों रात का अंधेरा बढने लगा वंकचूल की चिंता गहराने लगी। युवरानी जिसने कभी जंगल देखा ही न था वह इस भयावह अटवी में जहाँ शेर की दहाडें हैं तो चीतों की भयानक आवाज है, वहाँ युवरानी निश्चिंत होकर कैसे सोयेगी?

वंकचूल के दिमाग की नसों में तनाव बढ गया। जब उसकी बैचेनी सीमापार हो गयी तो वह उठकर महिला टेंट की ओर बढ गया। महिला टेंट में राजकुमारी अपनी भाभी से सटकर सो रही थी।

वंकचूल ने चंद्रमा की चांदनी में सुषुप्त दोनों सुंदरियों को देखा तो उसके मुँह का स्वाद बिगड गया। क्यों उसने अपने कुकृत्यों से इनका राजकीय वैभव छीना? क्या अधिकार है उसे जो इन्हें अपने जन्मजात अधिकार से वंचित कर जंगल में भटकने को मजबूर कर रहा है? क्या यह सौन्दर्य जंगल की खाक छानने के लिये है? उसके मुँह से एक गहरी साँस निकल गयी।

अचानक सुन्दरी की आँख खुल गयी। उसने अपनी उनिंदी आँखें खोली तो सामने भाई को खडा पाया।

सुन्दरी हडबडाकर उठ बैठी। उसने पूछा- क्या बात है भैया! नींद नही आ रही है या कोई समस्या है? नहीं... रही...।

कोई समस्या नहीं। यही पूछने आया था कि तुम्हें इस जंगल में पशु पक्षियों की आवाज से भय तो नहीं लग रहा? वंकचूल ने अपनी बहिन की मानसिकता समझने के लिये कहा।

नहीं भैया। आप साथ है फिर भय कैसा? आप हमारी चिंता बिल्कुल न करे। यहाँ हम प्रसन्न है। देखो तो सही निरभ्र गगन से कितनी सुन्दर दुधिया-चांदनी बरस रही है। आप निश्चिंत होकर विश्राम करे।

सुंदरी की आवाज की दृढता से वंकचूल आश्वस्त हुआ।

क्या बात है युवराज! आपका चेहरा विश्राम के बाद ताजगी भरा होना था उसकी अपेक्षा उदास और हताश क्यों लग रहा है? प्रवास के चौथे दिन वंकचूल को उसके साथी ने पूछा।

साथी की बात सुनकर वंकचूल हल्का मुस्कुराया और कहने लगा- तुम्हारी यह युवराज कहकर पुकारने की आदत कब खत्म होगी?

कभी नहीं...। क्योंकि आप पहले भी हमारे मालिक थे और आज भी हमारे मालिक हो। अब आप यह बताईये कि आखिर हमे कहाँ जाना है?

सुनकर वंकचूल की पैशानी में चिन्ता के कारण बल पड़ गये। कुछ देर बाद बोला- मैं सोचता हूँ हम किसी गाँव या शहर में स्थायी होने की अपेक्षा किसी वन्यपल्ली में ही रहे और कुछ-कुछ समय के अंतराल में किसी शहर या संपन्न गाँव की पूरी जानकारी लेकर वहाँ अपनी हस्तकला का प्रदर्शन करें।

साथियों को क्या एतराज था? उन्होनें स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया। रथ अब मुख्यमार्ग छोडकर आडे तिरछे ऊबड-खाबड मार्ग की ओर चलने लगे।

लगातार यह काफिला चलता रहा पर लगातार चलने के बावजूद भी ऐसा लग रहा था कि जंगल समाप्त होने की अपेक्षा निरंतर लम्बा होता जा रहा है। चारों ओर घनघोर जंगल... विशाल शाखा प्रशाखाओं से घिरी वृक्षावली... जहाँ पेड नहीं थे वहाँ उत्तुंग सीना ताने खडे पहाड थे।

वंकचूल देख रहा था- नाजूक राजकुमारी और राजवधु बहुत अधिक क्लान्त हो गयी है। इनका चेहरा एकदम मुरझा गया हैं। मुँह से कुछ कहती इसलिये नहीं कि

(शेष पृष्ठ 49 पर)

सादर
श्रद्धांजलि

# साध्वी श्री समाधिप्रज्ञाश्रीजी म. की समाधि

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

साध्वी रत्ना श्री समाधिप्रज्ञाश्रीजी म. के संथारापूर्वक स्वर्गवास के समाचारों से मन चिंतन में उतर गया।

मन अतीत में उतरा! संसार की असारता व देह की क्षणभंगुरता का बोध हुआ। अपनी जेठानी सौ. सुशीला देवी ललवानी के साथ सात महिने पूर्व जिन्होंने उपधान तप की महामंगलकारी साधना सम्पन्न की। तब लगता ही नहीं था कि श्यामा बहिन इतनी जल्दी यहाँ से विदा हो जायेंगे।

असाध्य व्याधि का जब उन्हें बोध हुआ तो उन्होंने धर्म आराधना, साधना के चिंतन की अभिवृद्धि कर ली। उन्होंने आत्म-बोध, आत्म-रुचि को अपने भावों का आधार बना लिया।

भयंकर पीड़ा में भी जो आत्म-समाधि और सहज प्रसन्नता उनमें प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हुई, उसका अन्य उदाहरण दुर्लभ है।

हमने सदा-सदा उनकी श्रद्धा-भक्ति को पाया। स्वास्थ्य की निरन्तर गिरती दशा में उन्होंने अपना आत्म-हित साध लिया। और 4 मई 2022 को उन्होंने विधिपूर्वक संथारा ग्रहण कर लिया। संथारा ग्रहण करने के समय का उनका मुखमंडल अपार प्रसन्नता से दमक रहा था। उनके चेहरे से उनका अन्तर् भाव ऐसे प्रकट हो रहा था, जैसे किसी नायाब हीरे को उन्होंने पा लिया हो। सच में संथारे को प्राप्त करके उन्होंने आत्मा के अमरत्व का वरदान जैसे पा लिया था। जिस प्रसन्नता और उल्लास से भर कर उन्होंने गीतिका के माध्यम से अपने हृदय के भावों को प्रकट किया था, लगता नहीं था कि उनके शरीर में कोई रोग है या उनकी भयंकर पीड़ा है।

दर्द की इस असामान्य स्थिति में उन्होंने चारित्र ग्रहण की दृढ़ कामना संकल्प के साथ प्रस्तुत की।

ऐसी स्थिति में चारित्र ग्रहण का भाव आना, कोई सामान्य बात नहीं है। जिनके अन्तर में भेद विज्ञान हो गया हो, आत्म-बोध रोम-रोम में रम गया हो, शरीर और परिवार के प्रति ममत्व बोध नाम-शेष हो गया हो, वे उच्च आत्मा ही ऐसी प्रतिकूल स्थिति में चारित्र ग्रहण की दृढ़ता प्रकट कर पाते हैं।

उनकी उच्च दशा, अध्यात्म रमणता की दशा को देखकर मैंने चारित्र अर्पण करने का निर्णय लिया।

ऐसी उच्च आत्मा को संयम प्रदान करते हुए मैं परम हर्ष व गौरव का अनुभव कर रहा था।

उन्होंने जिस उल्लास से संयम लिया, उसी बढ़ते उल्लास के साथ पालन किया। प्रतिदिन मैं देखता-उनकी आत्म-रमणता का भाव, अनासक्ति का भाव, अममत्व का भाव लगातार बढ़ता जा रहा था। 'हुं आत्मा छुं, जड़ शरीर नथी' की पंक्ति उनके हृदय का अमिट शिलालेख बन गया था।

मैं उन्हें कहता-यहाँ से सीमंधर स्वामी के पास जाना है। उनके साथ अपने हृदय के तार जोड़ने हैं। वे हमेशा सीमंधर स्वामी की रट लगाते।

उनका सरल, सौम्य, सहज, समाधि से परिपूर्ण जीवन देखकर मैं कहता-आप सीमंधर प्रभु के पास जाकर मुझे भूल न जाना। मुझे भी तिराना। निद्रा की स्थिति में यहाँ आकर मुझे जगाना। उनकी मुस्कुराहट में समाधि के भाव प्रकट होते।

ता. 12 मई से 3 जून तक की यह संयम यात्रा! एक दिन भी ऐसा नहीं बीता, जिस दिन उन्होंने मुझसे आत्म-जागृति का संदेश, मंगल पाठ न सुना हो।

कारणवश कभी देर हो जाती तो तुरन्त समाचार आते।

पूरे 31 दिन का सुदीर्घ संथारा! इतने लम्बे समय तक भी उनकी दिव्य आत्मा ने अपने समाधि के भाव टिकाये रखे। उनकी समाधि भरे भाव देखकर ही मैंने उन्हें नाम दिया-समाधिप्रज्ञाश्रीजी! इस नाम को उन्होंने पूर्ण रूप से सार्थक किया।

उनका जबरदस्त पुण्योदय था कि अत्यन्त धर्म-भावना से परिपूर्ण ललवानी कुल उन्हें मिला। ऐसा ही आराधक परिवार मिला। उनके सांसारिक पति श्री शांतिलालजी अत्यन्त धर्मश्रद्धा संपन्न श्रावक थे। उनके भी तन में व्याधि लेकिन मन में समाधि थी। उन्होंने भी संथारापूर्वक देह-त्याग किया था।

श्री वरदीचंदजी ललवानी परिवार का यह गौरव रहा है कि परिवार में ऐसे धार्मिक, आध्यात्मिक पात्रों का अवतरण है। अरुण, विवेक, शैलेष संकेश व पूरे ललवानी परिवार ने जिस प्रकार साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी के भावों को स्वीकार करते हुए अपनी अनुमति दी...रात दिन वैयावच्च की, उसकी जितनी अनुमोदना की जाय, कम है।

मेरी भावना थी कि साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी अपने मंडल के साथ शीघ्र इचलकरंजी पहुँचे। और साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजीको निर्यामणा, आराधना करावें। उनका विहार लम्बा हो रहा था। उनके निर्धारित विहार क्रम के अनुसार वे 3 जून को इचलकरंजी पहुँचने वाले थे। मैंने जोर देकर कहा-तुम्हें कैसे भी करके 1 जून को पहुँचना है।

मुझे बहुत प्रसन्नता रही कि अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना लम्बे-2 विहार कर आज्ञा का पालन किया।

आज साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी हमारे मध्य नहीं है। लेकिन उन्होंने व्याधि में समाधि का जीवन जीकर सभी को जीने की कला सिखा दी।

ललवानी परिवार गौरव का प्रतिपल अनुभव करे कि ऐसी दिव्य महान् आत्मा उनके साथ थी! उनका अनुकरण करे...उनकी साधना की अनुमोदना करे...!

उनकी दिव्य आत्मा महाविदेह क्षेत्र में विराजित होगी।

उनकी आत्मा शीघ्र ही परमपद मुक्तिधाम का वरण करेगी। वे तिरेंगे, सबको तारेंगे।

सभी को, सकल संघ को, ललवानी परिवार को धर्मलाभ कहें। उनके चारित्र की अनुमोदना कर परमात्मा-आज्ञा का पालन करते हुए अपनी आत्मा का कल्याण करे, यही अन्तर् की भावना है।

विशेष-साध्वी के रूप में साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी प्रथम शिष्या बनी, इसके लिए मैं हर पल...सतत गौरव का अनुभव करता हूँ।

गच्छ व समुदाय को उत्कृष्ट समाधि भावों से संपन्न ऐसे महान् साध्वीजी मिले, यह गच्छ व समुदाय का सौभाग्य है।

उनकी समाधि में मैं निमित्त बना, यह मेरे लिये गौरव की बात है।

## बाडमेर में वर्षीतप पारणा

बाड़मेर 3 मई । पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में बाड़मेर नगर में कुशल वाटिका के विशाल परिसर में सामूहिक वर्षीतप पारणा आयोजन समिति द्वारा वर्षीतप के पारणे का भव्य आयोजन वैशाख सुदि प्रथम तृतीया को संपन्न हुआ। आंचलगच्छीय आचार्य श्री कवीन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. के 21वें वर्षीतप का पारणा संपन्न हुआ। पारणा का लाभ रामजी का गोल निवासी पारसमलजी धारिवाल परिवार ने लिया।

तगभग 40 से अधिक तपस्वियों का पारणा हुआ। इस निमित्त तीन दिवसीय भव्य कार्यक्रम का अयोजन किया गया।

सादर
श्रद्धांजलि

# मृत्यु हो तो ऐसी

—उपाध्याय मनितप्रभसागर

परमात्मा महावीर का शासन अध्यात्म प्रधान है। इस शासन में जीवन को उत्सव बनाने पर जितना भार दिया गया है, उससे भी अधिक भार मृत्यु को महोत्सव बनाने पर दिया गया है।

पण्डित मरण अतीव दु:साध्य उपक्रम है। आचार्यों ने यहाँ तक कह दिया कि जीवन की समस्त जप-तप, स्वाध्याय-संयम आदि साधनाओं का फल पण्डित मरण है।

जिस पण्डित मरण का वरण करने के लिये पण्डित आत्माओं को कितने ही भव लग जाते हैं, उसी पण्डित मरण की उपलब्धि से परित संसारी, आसन्न भवी व लघुकर्मी होने वाले साध्वी श्री समाधिप्रज्ञाश्रीजी का आराधनामय जीवन मेरी आँखों के सामने तैर रहा है। उनकी जान-पहचान आज की नहीं, अपितु वर्षों पुरानी और उस समय की है, जब वे श्यामाजी के नाम से प्रसिद्ध थे।

शादी से पहले तेरापंथ में श्रद्धान्वित श्यामाजी विवाह के बाद खरतरगच्छ के प्रति अप्रतिमरूपेण अर्पित-समर्पित थे। ललवाणी परिवार अर्थात् गच्छ के प्रति पूर्णतया भावनाओं से जुड़ा हुआ परिवार!

जहाँ तक मुझे ख्याल में आ रहा है, वहाँ तक मुझे याद है कि उन्होंने सारे नियम, विधियाँ, प्रतिक्रमण आदि अपने श्वसुरजी वरदीचंदजी ललवाणी के श्रीमुख से सीखे थे। इसमें सम्यग्दर्शनाश्रीजी का भी योगदान था।

मुमुक्षु काल में उनसे जब भी मिलता था तो एक ही बात करता था कि शैलेश को शासन की गोद में सौंप दो। मेरी इस बात पर वे न केवल सहमति जताते थे अपितु कहते थे कि मेरी कोई रोकटोक नहीं है। ये दीक्षा ले तो इनके पीछे हमारा भी उद्धार हो जायेगा। वास्तव में लूंकड परिवार का पुण्य अलबेला है, जो इतने रत्न इस कुल में पैदा हुए हैं। कहते हुए उनका गला आनंद मिश्रित अनुमोदना से अवरुद्ध हो जाता। कई बार नयन-युगल अश्रुओं से छलक उठते।

सन् 2014 के इचलकरंजी चातुर्मास में उनको अधिक गहराई से जानने का मौका मिला। वे एक सुसंस्कृत पुत्रवधु थे तो वात्सल्यमयी सासु भी थे। वे श्राविका के रूप में शासन का महत्त्व समझते थे तो साधु-साध्वियों की माँ बनकर उनके प्रति वात्सल्य व गौरव का भी अनुभव करते थे। वे मिष्ट भाषी होने के साथ स्पष्टवादी भी थे। सुरीला कण्ठ मानो उनको जन्मत: प्राप्त था।

जब मैं याद करता हूँ कि उन्हें मैंने अन्तिम बार कब देखा था तो मोकलसर का उपाश्रय याद आ जाता है। वहाँ उन्होंने गुरुदेवश्री के साथ इचलकरंजी चातुर्मास करने के लिये मुझे बहुत गहरे अपनत्व से निवेदन किया था।

सन् 2021 का गुरुदेव का चातुर्मास पालीताणा था और मेरा सूरत था। पालीताणा में उन्होंने पहला उपधान करते हुए मोक्षमाला धारण की थी। पर इस उपक्रम के बाद जैसे कर्मराजा को श्यामाजी की खुशहाल जिन्दगी रास नहीं आई।

कैंसर का भयंकर आक्रमण ! डॉ. ने कह दिया कि अब सुधार की कोई गुंजाईश नहीं है। यह सुनकर श्यामाजी

की मन:स्थिति में कोई फर्क नहीं आया। यह तो एगोऽहं नत्थि मे कोइ...शरीरं व्याधि मंदिरं, जीवो अण्णो शरीरो अण्णो जैसे स्वाध्याय-सूत्रों को आचरण में उतारने का वक्त था।

शरीर की स्थिति लगातार गिर रही थी पर भावों का उर्ध्वगमन सतत वर्धमान था। जब लगा कि अब इस शरीर रूपी दुकान से कुछ भी हासिल नहीं होने वाला है, तो उन्होंने सत्त्व और साधना के श्रेष्ठतम उपक्रम रूप संथारा स्वीकार कर लिया। इस दौरान शुभ भावनाओं का ऐसा उत्तम वर्तुल बना कि 12 मई 2022 को उन्होंने समस्त पापों का प्रत्याख्यान करके दीक्षा स्वीकार कर ली।

एक तरफ महाव्याधि, दूसरी तरफ परम समाधि।

एक ओर कैंसर की पीड़ा, दूसरी ओर आत्म-प्रसन्नता।

सत्त्व और आत्मबल की कर्मराजा पूरी तौर पर घोर और कठोर परीक्षा ले रहा था।

एक पक्ष बीता...बीस दिन...पच्चीस दिन बीते। मासक्षमण रूप महामृत्युंजय तप भी हो गया। 31वां दिन! पीड़ा सतत बढ़ रही थी पर प्रसन्नता भी उत्तम कोटि की थी। व्याधि जितनी भयंकर, समाधि भी उतनी ही गहरी। परिवारजनों की सेवा भी अभिनंदनीय।

अक्षय तृतीया को संथारा लिया, शासन स्थापना दिवस को दीक्षा हुई और ता. 3 जून को संथारे का 31वां दिन था। शरीर में हलचल सी थी। दोपहर के समय 2.57 पर गुरुदेवश्री खरतरगच्छाधिपतिजी के श्रीमुख से मांगलिक सुनते हुए साध्वी श्री समाधिप्रज्ञाश्रीजी ने समाधिपूर्वक नश्वर शरीर का त्याग कर दिया। उनकी आत्मा देवलोक की ओर प्रयाण कर गई।

वास्तव में जीवन के अंतिम एक माह में श्यामाजी ने साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी बनकर न केवल आत्महित को साधा अपितु अल्प भवों में मोक्ष प्राप्ति का आरक्षण भी करवा लिया। मन बार-बार अनुमोदना के अमृत से छलक उठता है। वाह! घोर व्याधि में 31 उपवास पूर्वक समाधि मरण को साकार करने वाले कितने महान् होंगे? गुणानुवाद के इस समय अरिहंत भगवंत से प्रार्थना करते हैं कि वे शीघ्र ही परम साधना के साथ परमलोक के यात्री बने और हमें भी आधि-व्याधि के मध्य आत्म-समाधि का पाथेय प्रदान करें।

## पालीताना में सर्व जन हितार्थ कॅम्प का आयोजन

पालीताना 4 मई। श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट चुलै चेन्नई द्वारा वर्धमान जिनेश्वर सेवा ट्रस्ट के अंतर्गत पालीताना में विशाल विकलांग केम्प लगाया गया। जिसमें जरुरतमंदों को ट्राइसाइकल, व्हील चेयर, केलीपर, श्रवण यंत्र, वाकर, आदि जरुरतमंदों को दी गई। अतिथि विशेष कलेक्टर सिद्धार्थ भाई गढवी, कोरपोरेशन मेयर, प्रतिनीधि अजयभाई शेठ, पालीताना जैन संघ से हितेशभाई अजमेर एवं चेतनभाई मेहता, वर्धमान भाई एवं राजू भाई गुलेछा मद्रास की उपस्थिति में कलेक्टर द्वारा ट्रस्ट के कार्य की खुब अनुमोदना की गई।

पधारे हुए सभी अतिथिओं ने अपने कर कमलों से सबको उनके जरुरत की चीजे बांटीं। श्री आदिनाथ ट्रस्ट के सेक्रेटरी डॉ. मोहन जैन ने मूलचंदजी गुलेच्छा चैन्नई सहित सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनोज जैन उपाध्यक्ष आदिनाथ जैन ट्रस्ट चुलै चेन्नई द्वारा किया गया। इस मौके पर डॉ. निर्मला बरडिया का विशेष सहयोग रहा।

सादर
श्रद्धांजलि

# गुरु तराशकर तारणहार बनाता है...

–गुरु हेमचरण रज साध्वी प्रमुदिताश्रीजी म.

इतिहास काँच के टुकड़ो का नहीं,
उज्जवल हीरो का होता है।
इतिहास घास के तिनकों का नहीं
फौलादी तीरों का होता है।
प्रतिकूलता के समय में जो हिम्मत हार जाते है
इतिहास उनका नहीं
अपितु गुरुवर्याश्री जैसे श्रेष्ठ साधक
आत्माओं का होता है।।

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों का अवलोकन करे तो जिस तत्त्व से प्रथम युगादिदेव आदिनाथ प्रभु एवं चरम तीर्थाधिपति भगवान महावीर को सम्यक्त्प की प्राप्ति हुई, जिस तत्त्व से अहंकारी इन्द्रभूति भी विनयवान् गौतम गणधर बन गये। जिस तत्त्व से बालमुनि अइमुत्ता भी पश्चात्ताप की धारा में बहने लगे, जिस तत्त्व ने मृगावती साध्वी को केवलज्ञान की भेंट दे दी, जिस तत्त्व ने महाराजा अकबर को प्रतिबोधित कर अहिंसक बना दिया, जिस तत्त्व ने एकलव्य को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर दिया ऐसा महान तत्त्व अगर कोई है तो वह 'गुरुतत्त्व' है । गुरु ही वह महान तत्त्व है जो हमें विभाव से स्वभावदशा तक, मिथ्यात्व से सम्यक्त्व तक, अज्ञान से ज्ञान तक और मोह से मोहन तक ले जाता है।

जिस प्रकार पानी की एक बूंद रेगिस्तान में गिरकर स्वयं के स्वामित्व को समाप्त कर लेती है, परंतु वही पानी की बूंद यदि सीप में गिरती है तो अनमोल मोती बन जाती है। ठीक उसी प्रकार गुरुतत्त्व हमें परमात्मा बना देता है। अग्नि का स्वभाव है दाहकता, विष का स्वभाव है मारकता और गुरु का स्वभाव है तारकता। गुरु ही तारता है तराशता है और हमें तारणहार बनाता है।

ऐसी अद्‌भुत व्यक्तित्व की धनी गुरुतत्त्व की गरिमा से ओतप्रोत खरतरगच्छीया आत्मसाधिका पू. श्री अनुभवश्रीजी म.सा. की सुशिष्या सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. थीं। जिनके गुणों की कोई गणना नहीं, जिनकी समता की कोई सीमा नहीं, जिनके वात्सल्य में कोई विराम नहीं, उनके गुणों का बखान करूं तो कैसे करूँ...! मेरे शब्दों में इतना कोष नहीं, सारी दुनियां में ढुंढ लिया मैंने, मेरी गुरुवर्याश्री जैसा कोई नहीं।

हजारों सितारों में चाँद एक होता है,
हजारों वृक्षों में चंदन एक होता है,
पत्थर की खान में भी हीरा मिलता है कहीं–कहीं
हजारों जन में गुरुवर्या जैसा व्यक्तित्व विरला ही होता है।

गुरुवर्या श्री का जीवन ज्ञान की गंगोत्री, दर्शन का दरिया, चारित्र की चदरिया एवं स्वाध्याय रूपी तप का ताज सदा शोभायमान रहता था। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन स्वाध्याय संयम और स्वरमणता में व्यतीत किया। बाल्यकाल से ही विचक्षण प्रतिभा की धनी थी। अल्पसमय में ही आगम शास्त्रों का अध्ययन किया। संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू भाषा पर संपूर्ण प्रभुत्व था। विचार और वाणी विलक्षण थी। आपश्री का ओजस्वी प्रभावशाली प्रवचन व्यक्ति, संघ, समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखता था और नई प्रेरणाओं से प्रेरित एवं प्रस्फुटिक करता था।

कहा है–

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदं।
मन्त्र मूलं गुरो र्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।।

गुरु की आकृति का ध्यान सर्वश्रेष्ठ ध्यान है, गुरु चरण की पूजा सर्वश्रेष्ठ पूजा, गुरु आज्ञा सर्वमंत्रों में श्रेष्ठ मंत्र है एवं गुरु कृपा मोक्ष का मूल है। अर्थात शिष्य को सर्वप्रथम गुरु कृपा प्राप्त करनी चाहिए। इस श्लोक के हार्द को

यथानाम तथागुण सम्पन्ना पू. विनीतप्रज्ञाश्रीजी म. ने अपने जीवन में आत्मसात किया था। उनके जीवन में गुरु का स्थान सर्वोपरि था। गुरु का चिंतन उनके श्वास, धड़कन, रग-रग में रहता था। प्रज्ञासम्पन्ना होने के बावजूद भी उनके जीवन में लेशमात्र का अहंकार नहीं था। गुरुभक्ति एवं गुरु समर्पण का यह उदाहरण विरला ही मिलता है।

गुरुवर्या द्वय को प्रयाण किये चौदह साल व्यतीत हो गये पर जब-जब भी जेठ सुदि सप्तमी का दिन आता है हृदय दूषित हो उठता है, अखियाँ झरझर बहने लगती है, मन को विश्वास नहीं होता कि गुरुवर्याश्री हमें मझधार से अकेला छोड़कर इस धरा से सदा के लिए प्रयाण कर गई। उनकी कमी को कोई पूर्ण नहीं कर सकता। उनकी 14वीं भावांजलि दिवस के अवसर पर उनके गुणों का गुणगान करके अपने जीवन में भी उन गुणों को अपनाकर सच्ची श्रद्धांजलि, भावांजलि एवं स्मरणांजलि देकर अपने जीवन को धन्य बनाये।

वह कौन सा फुल है जिसमें गुरुवर्या की सुवास नहीं ।
वह कौन सा दीप है जिसमें गुरुवर्या का प्रकाश नहीं ।
जमीन का जर्रा जर्रा गाता है जिनकी गुण गाथा,
वह कौनसा पन्ना है जिसमें गुरुवर्या का इतिहास नहीं ।।

## वर्षीतप के पारणे संपन्न

- पालीताना 3 मई । श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पुण्यधरा पर पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या प्रशिष्या पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री स्थितप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री संवेगप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री सहजप्रज्ञाश्रीजी म. के वर्षीतप का पारणा ता. 3 मई 2022 को जिनेश्वर भवन में संपन्न हुआ। तपस्या निमित्त भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- पालीताना । पू. गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. तपोरत्नाश्री सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री प्रिय मंत्राजनाश्रीजी म. के वर्षीतप का पारणा श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में सान्नद संपन्न हुआ।
- पार्श्वमणि तीर्थ । पूज्य स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म., पू. गणिवर्य मनीषप्रभासागरजी म. आदि ठाणा 4 व पू. गणिनी प्रवरा पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में पार्श्वमणि तीर्थ श्री धन्य धरा पर वर्षीतप पारणे का आयोजन किया गया। पू. साध्वी श्री प्रिय वर्षाजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियमेघांजनाश्रीजी म. के तथा तिरुपातूर से पधारे कवाड़ परिवार के वर्षीतप के पारणे ता. 3 मई 2022 को संपन्न हुए।

## जयपुर में दीक्षा महोत्सव का आयोजन

जयपुर। गलता गेट स्थित मोहनबाडी दादाबाडी में दिनांक 22.5.2022 को श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के तत्वावधान में तथा परम पूज्य मुनिराज श्री महेन्द्रसागरजी, मुनि श्री मनीषसागरजी म. आदि ठाणा तथा साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में भागवती दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

बालाघाट (म.प्र.) निवासी दीक्षार्थी श्री राकेश सुराना धर्मपत्नी श्रीमती लीना सुराना और पुत्र श्री अमय सुराना ने पुरे परिवार के साथ भागवती दीक्षा अंगीकार की। इस अवसर पर दीक्षार्थी बहिन पूजा नवलखा की भी भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

दीक्षा के पश्चात मुमुक्षु राकेशजी सुराना का नाम मुनि श्री यशवर्धनसागरजी, मुमुक्षु अमय सुराना मुनि श्री जिनवर्धनसागरजी, मुमुक्षु लीना सुराना का नाम साध्वी श्री संवररुचिश्रीजी तथा मुमुक्षु पूजा नवलखा का नाम साध्वी श्री तत्वरुचिश्रीजी का नाम घोषित किया गया। दीक्षा के अवसर पर विभिन्न स्थानों के चातुर्मास की घोषणा भी की गई। दीक्षा कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में भक्तजन पधारे थे।

# धोरिमन्ना में मुमुक्षु रविना बोथरा की दीक्षा संपन्न

धोरीमन्ना 27 अप्रेल। धोरीमन्ना में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा., वसीमालाणी रत्नशिरोमणि ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा, माताजी म. साध्वी रतनमालाश्रीजी म., बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म., पू. साध्वी अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में मुमुक्षु कु. रवीना बोथरा के त्रिदिवसीय दीक्षा महोत्सव में वर्षीदान का वरघोड़ा निकाला गया। इस वरघोड़े में देशभर के अनेक श्रद्धालु साक्षी बनें।

मुख्य मार्गों से होता हुआ वरघोडा दीक्षा स्थल मणि प्रमोद वाटिका पहुंचा, जहां नरेन्द्र भाई वाणीगोता द्वारा गुरुवंदन और पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री के मुखारविंद से मांगलिक के साथ कार्यक्रम शुरु हुआ। पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री ने फरमाया कि धोरीमन्ना की धरती पर इतिहास में पहली बार ऐसा स्वर्णिम सूर्योदय हुआ है, जिसमें मुमुक्षु रत्ना रविना बोथरा संयम पर आगे बढकर संघ समाज परिवार की शान बनेगी।

सकल संघ की महिलाओं द्वारा बड़ी सांझी, अंतिम वायणा व रात्रि में भव्य भक्ति संध्या एवं दीक्षार्थी बहन की विदाई कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

दि. 27 अप्रेल को मणि प्रमोद वाटिका में शुभ मुहूर्त में मुमुक्षु रवीना बोथरा की दीक्षा विधि प्रारंभ हुई। कल तक जो स्वर्ण आभूषण और मंहगे वस्त्रों के साथ नजर आ रही थी रवीना बोथरा अब साध्वी तन्मयरुचि श्रीजी म. बनी। साध्वी तन्मयरुचि श्रीजी म. ने बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री जी का शिष्यत्व स्वीकार किया। अलसुबह ही हजारों की जनमेदिनी पंडाल में दीक्षा देखने के लिए उपस्थित हो गई थी। देखते ही देखते वो घड़ी आ गई और गच्छाधिपति के करकमलों से मुमुक्षु रवीना बोथरा को रजोहरण प्राप्त हुआ और रजोहरण मिलते ही मुमुक्षु रवीना बहन खुशी से झूम उठी।

महोत्सव में दीक्षा महोत्सव के लाभार्थी एवं सहयोग करने वाले सहयोगियों तथा अतिथियों का बहुमान किया गया। इस अवसर पर कई हस्तियों व अतिथियों ने शिरकत की। रात्रि में भक्तिभावना में संगीतकार नरेन्द्र वाणीगोता ने भजनों की प्रस्तुतियां दी और पाण्डाल में उपस्थित जनसमुह को बांधे रखा। दीक्षा महोत्सव को ऐतिहासिक बनाने व चार चांद लगाने के लिए सकल जैन श्री संघ धोरीमना, श्री बाड़मेर जिनकुशलसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, केयुप केन्द्रीय समिति, केयुप धोरीमना व बाड़मेर, केएमपी धोरीमना व बाड़मेर सहित कई कार्यकर्ताओं ने विशेष रूप से श्री लूणकरणजी बोथरा (पूर्व सभापती) अपनी विशेष सेवाएं देते हुए ऐतिहासिक बनाया। बोथरा परिवार द्वारा दीक्षा महोत्सव को सफल बनाने वाली संस्थाओं का

## मुमुक्षु रविना बोथरा के दीक्षा निमित्त विशिष्ट चढावों के लाभार्थी

विदाई तिलक-संघवी श्री तेजराजजी पुखराजजी गुलेच्छा, मोकलसर
चादर- श्रीमती ढेलीदेवी केसरीमलजी बोथरा, बाड़मेर
कामली-श्री मूलतानमलजी लक्ष्मणदासजी वडेरा, बाड़मेर
पात्रे- श्री गौतमचन्दजी मेवारामजी बोहरा, बाड़मेर
साडा- श्रीमती मेवीदेवी भंवरलालजी बोथरा, बाड़मेर
आसन- श्री मेवारामजी सुरेशकुमारजी बोथरा, बाड़मेर
डंडा- श्री पारसमलजी पोकरदासजी बोहरा, धोरीमन्ना
डंडासन-श्रीमती सुआदेवी रिखबचन्दजी वीरवाडिया, बाड़मेर
माला-श्री पारसमलजी आसुलालजी धारीवाल, रामजी का गोल
ज्ञान पोथी-श्री पन्नालालजी गौतमचन्दजी कवाड, फलोदी
संथारा-श्री हिन्दूमलजी हमीरमलजी लूणिया, धोरीमन्ना
ठवणी-श्री बाबुलालजी भूरचन्दजी लूणिया, धोरीमन्ना-बाड़मेर
उत्तरपट्टा-श्री बाबुलालजी भूरचन्दजी लूणिया, धोरीमन्ना - अहमदाबाद
पूंजणी-श्री बाबूलालजी राणामलजी लालन, धोरीमन्ना
सूपडी-श्रीमती पुष्पादेवी राणामलजी दलाल, बाड़मेर
कामली-श्री मेवारामजी बोथरा, परिवार
गुरु पूजन-श्री लूणिया परिवार धोरीमन्ना

प्रेषक-कपिल मालू

## एमवीसी स्कूल ( कुशल वाटिका ) द्वारा आवश्यक सामग्री वितरण

बाड़मेर 11 मई। स्थानीय मथरीदेवी विरधीचंद छाजेड़ पब्लिक स्कूल (कुशल वाटिका) में दि. 11 मई को कक्षा 1 से 8 तक के छात्र-छात्राओं द्वारा शहर की गरीब बस्तियों में जाकर आवश्यक सामग्री वितरित की गई। इस कार्यक्रम में सभी छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

बच्चों में परोपकार की भावना विकसित करने हेतु इस तरह के कार्यक्रमों का यह दूसरा चरण है। प्रथम चरण में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों ने सामग्री वितरित की थी। इस कार्यक्रम के दौरान विनीता छंगानी, पूजा छंगानी, विनोद कुमार, सीमा परमार, कंचन जोशी, दर्शना जोशी, प्रवीण नाहटा आदि शिक्षकगणों का सहयोग सराहनीय रहा।

-बाबूलाल राणा शिक्षक

## सूरत में 108 बार इकतीसा का पाठ

सूरत 24 अप्रेल। हरिपुरा दादावाड़ी में अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् (केयुप), सूरत शहर शाखा द्वारा सूरत नगर में बिराजमान खरतरगच्छीय 32 साध्वीजी भगवंत की निश्रा में 108 दादागुरुदेव इकतीसा जाप का एक अनूठा भव्य आयोजन 24 अप्रैल 2022 को हुआ।

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. गच्छ गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा-12 की पावन प्रेरणा - निश्रा एवं पू. साध्वी प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 10, पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा 5, पू. साध्वी अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा 3, पू. साध्वी मोक्षरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 के सानिध्य में हरिपुरा स्थित प्राचीन श्री जिनदत्तसूरि दादावाड़ी में सुबह 6 बजे से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

पूरी दादावाड़ी को सुगंधित पुष्पों से सजावट की गई। विविध मंत्रोच्चार के साथ 108 बार इकतीसा का पठन किया गया। जाप करीबन दोपहर के 12:30 बजे तक संगीतमय चला।

कार्यक्रम में केयुप, सूरत शहर शाखा द्वारा पक्षी के लिए मुफ्त में पानी के कुंडे वितरण के कार्य का अनावरण और घर-घर दी जा रही जीवदया, अनुकंपा, साधर्मिक, साधु साध्वी वैयावच्च पेटी का भी अनावरण किया।

जाप के पश्चात अल्पाहार रखा गया। इस कार्यक्रम में श्री शीतलवाड़ी खरतरगच्छ जैन संघ, श्री खरतरगच्छ दादा साहब जैन देरासर हरिपुरा दादावाड़ी ट्रस्ट, श्री बाड़मेर जैन संघ, श्री कुशल कांति खरतरगच्छ जैन संघ के साथ-साथ श्री जिनदत्तसूरि मंडल गोपीपुरा, कुशल सज्जन महिला मंडल गोपीपुरा, केयुप - केएमपी पर्वत पाटिया शाखा, केयुप - केएमपी पाल शाखा का भी सहयोग रहा।

कार्यक्रम के मुख्य लाभार्थी, सभी सहयोगी लाभार्थी एवं सभी कार्यकर्ताओं की अनुमोदना की गई।

-अल्पेश छाजेड

# बाड़मेर महावीर वाटिका में प्रतिष्ठा संपन्न

बाडमेर 8 मई। बाडमेर नगर में जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ओसवाल श्री संघ द्वारा निर्मित महावीर वाटिका के विशाल परिसर में परमात्मा महावीरस्वामी जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा., पूज्य तपस्वी आचार्य प्रवर श्री कवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य नूतन उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. पूज्य नूतन गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 13, पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3, पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3, पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 2 आदि तथा आंचलगच्छीय पू. साध्वी श्री नंदीक्षोणाश्रीजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी समुदाय की परम पावन निश्रा में ता. 8 मई 2022 को संपन्न हुई।

### प्रतिष्ठा की विशेषताऐं

- पूज्य गच्छाधिपतिजी समेत तीन आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठा
- कुल 19 साधु व 25 साध्वीजी म. की पावन निश्रा
- पूरे बाडमेर व आसपास के क्षेत्रों में प्रतिष्ठा के पांच दिनों में संपूर्ण शान्ति, कहीं शोक नहीं।
- संपूर्ण जयणा पूर्वक भोजन व्यवस्था
- 8000 से अधिक साधर्मिक भोजन में रात्रि भोजन का सर्वथा त्याग रहा।
- पांचों ही दिन बैठकर भोजन संपन्न हुआ, बुफे का सर्वथा त्याग।
- एक किलो जितना भोजन भी झूठा नहीं गया।
- प्रतिष्ठा के साथ उपाध्याय व गणि पदारोहण तथा बडी दीक्षा का आयोजन
- बाडमेर जैन श्री संघ के दोनों गच्छों- खरतरगच्छ व आंचलगच्छ में एकता का अनूठा वातावरण हुआ।

महोत्सव का प्रारंभ ता. 4 मई को पूज्य आचार्य प्रवरों के मंगल प्रवेश से हुआ। प्रारंभिक समस्त पूजाओं, विधि विधानों के पश्चात् शाम को च्यवन कल्याणक विधान किया गया।

ता. 5 मई को प्रातः जिनमंदिर में जन्म कल्याणक विधान संपन्न हुआ। मंचीय कार्यक्रम में प्रभु का च्यवन और जन्म कल्याणक की उजवणी संपन्न हुई। साथ ही मेरु पर्वत पर अभिषेक, अठारह अभिषेक आदि विधान संपन्न हुए।

ता. 6 को प्रभु की जन्म बधाई, नामस्थापना, पाठशाला गमन, विवाह, राज्याभिषेक, नवलोकान्तिक देवों द्वारा विनंती आदि का भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ता. 7 मई को परमात्मा के दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोडा आयोजित हुआ। वरघोडे का प्रारंभ जैन न्याति नोहरे से किया गया। मुख्य मार्गों से होता हुआ महावीर वाटिका पहुँचा। वरघोडे में विशाल उपस्थिति उनकी श्रद्धा को प्रतिबिम्बित कर रही थी। वरघोडे के पश्चात् प्रतिष्ठा संबंधी बोलियाँ संपन्न हुई। आशातीत बोलियां हुई।

रात्रि में शुभ मुहूर्त्त में पूज्य गच्छाधिपति आचा मुहूर्त्त में 51 इंच के विशाल परमात्मा महावीर स्वामी, 31 इंच के गणधर गौतम स्वामी एवं 31 इंच के नाकोडा भैरव की प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित की गई। शिखर पर ध्वजा लहराई गई व स्वर्ण कलश चढाया गया।

इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री ने कहा- बाडमेर क्षेत्र पर पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. का अनंत उपकार है। वे यदि वि. सं. 2018 में बाडमेर नहीं पधारे होते तो बाडमेर श्री संघ का वातावरण अलग होता।

आज यदि खरतरगच्छ संघ व आंचलगच्छ अपनी-अपनी आराधना कर रहे हैं, तो वह पूज्य आचार्यश्री के कारण! पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री ने बाडमेर संघ को सदा अपना माना। वे फरमाते थे- खरतरगच्छ व आंचलगच्छ दोनों मेरी दो आंखें हैं।

इस अवसर पर आंचलगच्छ के आचार्य श्री कवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा- खरतरगच्छ हमारा बडा भाई हैं। हम सभी को हिल मिलकर एक साथ रहना है। और जिन शासन का जयनाद गुंजाना है।

इस पावन अवसर पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री ने जैन श्री संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी वडेरा को 'संघ गौरव' अलंकरण से विभूषित किया। जिसका श्री संघ ने अनुमोदन करते हुए प्रशस्ति पत्र अर्पण करने की घोषणा की।

ता. 9 मई को द्वारोद्घाटन संपन्न हुआ। बाद में सतरह भेदी पूजन पढाने के साथ महोत्सव अत्यन्त आनंद मंगल के साथ संपन्न हुआ।

मूलनायक परमात्मा महावीर स्वामी को बिराजमान करने का लाभ पारसमलजी हीरालालजी छाजेड़, बाड़मेर(महामंत्री)

ध्वजा का लाभ सतीशकुमारजी मेवारामजी छाजेड़।

स्वर्णकलश का लाभ बाबुलालजी मालू, बाड़मेर (उपाध्यक्ष)

गौतमस्वामीजी - रमेशकुमारजी पारसमलजी लूणिया।

नाकोड़ा भैरव - प्रकाशचंदजी कन्हैयालालजी नेमीचंदजी वडेरा (अध्यक्ष)

प्रतिष्ठा महोत्सव में विधि विधान कराने मक्षी निवासी श्री हेमन्तभाई मुथा पधारे थे। सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री विनीत गेमावत ने पंचकल्याणक उजवणी व रात्रि भक्ति में रंग जमाया।

भोजन व्यवस्था का दायित्व जसोल निवासी श्रावकवर्य श्री रमेशजी गोगड ने पूरी जयणा के साथ निभाया।

# केयुप भवन का भूमिपूजन संपन्न

## साधर्मिक जैन भाईयों के रोजगार के लिए बनेगा भवन

बाड़मेर 15 अप्रेल। जैन विधापीठ के पास मोक्ष मार्ग पर स्थित भूखण्ड पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के केयुप भवन के भूमिपूजन दि. 15 अप्रेल को सम्पन्न हुआ। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के तत्त्वावधान में पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की पावन निश्रा व बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी आदि ठाणा के पावन सानिध्य व राजस्थान गौ सेवा आयोग अध्यक्ष व बाड़मेर विधायक मेवारामजी जैन व नगर परिषद सभापति दीपक माली के मुख्य आतिथ्य में केयुप भवन के भूमि पूजन का कर्यक्रम आयोजित हुआ।

भूखण्ड व भूमि पूजन के लाभार्थी सोहनलाल आसुलाल वडेरा परिवार जोधपुर द्वारा विधिकारक प्रकाश भाई सांचौर द्वारा विधि-विधान मंत्रोच्चार के साथ शुभ मुहूर्त में किया गया और इसी वडेरा परिवार द्वारा केयुप की कुशल वाटिका में चल रही साधार्मिक फ्लेट योजना में एक फ्लेट का लाभ लिया गया। दीक्षार्थी बहन मुमुक्षु रवीना बोथरा व अतिथियों का अभिनन्दन किया गया। इसके पश्चात 8.30 बजे गुरुदेव का मांगलिक प्रवचन हुआ।

गच्छाधिपतिजी ने कहा कि पुण्यशाली लोग ही अपने साधर्मिक भाई की मदद कर सकता है ये सौभाग्य हर किसी को नहीं मिलता। राजस्थान गौ सेवा अध्यक्ष मेवाराम जैन ने कहा कि बढती बेरोजगारी में लघु उद्योग साधर्मिक भाईयों के लिए उपयोगी साबित होगा। हम सब का दायित्व बनता है कि हम अपने भाईयों का मदद कर उसे मुख्य धारा में लाए। जैन ने केयुप को साधुवाद देते हुए कहा कि इस तरह के प्रकल्प बनाकर पूरे भारतभर के साधर्मिक भाईयों के मददगार बने।

इस समारोह में कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल, केयुप, केएमपी, केबीपी, ज्ञान वाटिका सहित सकल जैन समाज बाड़मेर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

प्रेषक- कपिल मालू, प्रकाश पारख (अध्यक्ष केयुप)

## 78वीं ओली का पारणा संपन्न

चौहटन 30 अप्रेल। पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. के वर्धमान तप की 78वीं ओली का पारणा चौहटन नगर में ता. 30 अप्रेल को संपन्न हुआ।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. ने उन्हें पारणा कराया। आचार्य श्री ने कहा कि 78 ओली की आपकी यात्रा बहुत ही कम समय में हुई है। निरन्तर तप चल रहा है। एक वर्ष में तीन ओलियां आपने संपन्न की है। आपके तप की अनुमोदना है। शेरगढ-अहमदाबाद से पधारे राजेशजी लूणिया ने पूज्या श्री को स्फटिक रत्नमयी प्रतिमा अर्पण की।

# बाड़मेर में पदारोहण विधान संपन्न

बाडमेर 8 मई। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य प्रवर श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. ठाणा 15 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 13, पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3, पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3, पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 2 आदि विशाल संख्या में बिराजमान साधु साध्वीजी भगवंतों की पावन निश्रा में पूज्य गणिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. को उपाध्याय पद एवं पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. को गणि पद से विभूषित किया गया।

इस पावन अवसर पर आंचलगच्छ के आचार्य प्रवर श्री कवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा. ठाणा 2 एवं आंचलगच्छीया पूजनीया वयोवृद्धा साध्वी श्री नंदीषेणाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य का लाभ प्राप्त हुआ।

यह समारोह वि.सं. 2079 वैशाख सुदि 7 रविवार ता. 8 मई 2022 को अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा एवं श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी के तत्त्वावधान में संपन्न हुआ।

समारोह के आयोजन का संपूर्ण लाभ श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ओसवाल श्री संघ बाडमेर ने लिया।

प्रात: 7 बजे पूज्य पदधारक मुनि भगवंतों का क्रिया मंडप में प्रवेश हुआ। मुनिजनों ने गोद में उठाकर मंडप में प्रवेश करवाया।

विधि-विधान के साथ पूज्य गुरुदेवश्री ने उनका कर्णपूजन कर मंत्र-विद्या का श्रवण करवाया।

साथ ही धोरिमन्ना में दीक्षित साध्वी तन्मयरुचिश्रीजी म. की बडी दीक्षा भी इसी महोत्सव में हुई।

पू. गुरुदेव गच्छाधिपति अपने दोनों योग्य प्रिय शिष्यों को आशीर्वाद देते हुए हित शिक्षा प्रदान की। उन्होंने कहा-जिस प्रकार घड़े में पानी आने पर भारी हो जाता है। उसी प्रकार पद पाकर तुम्हें अत्यधिक विनम्र होना हैं। शासन व गच्छ की सेवा करना है। परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित रहकर आत्म कल्याण करना है।

इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा- आज मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न है। मैंने अपने अन्तर का जो निवेदन 20 जनवरी 2020 को पूज्य आचार्यश्री के समक्ष रखा था, वह आज पूर्ण होने जा रहा है। योग्य मुनियों को योग्य पदों से विभूषित किया जा रहा है, यह गच्छ व समुदाय का गौरव है।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य नूतन उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म. ने अपने उपकारी माता पिता आदि के उपकारों का स्मरण करते हुए श्री संघ को जैन धर्म के अनुसार अपने जीवन के निर्माण करने की प्रेरणा दी।

पूज्य नूतन गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने कहा- यह मेरा परम सौभाग्य है कि पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की कर्मस्थली इस बाडमेर नगर में यह समारोह संपन्न हो रहा है। मुझमें योग्यता का अभाव होने पर भी पूज्य गुरुदेवश्री के आदेश को मैं बिना मन से स्वीकार करता हूँ। प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे शक्ति और क्षमता प्रदान करें। समस्त विधि विधानों की संपन्नता के पश्चात् पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री ने नामकरण संस्कार किया।

## पदारोहण पर विशिष्ट लाभ लेने वाले भाग्यशाली

**पूज्य उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म. को उपकरण वहोराने के लाभार्थी**

वर्धमान विद्या यंत्र- श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड़, तिरुपातुर
स्वर्णमाला- छगनलाललली मेवारामजी घीया सूरत
गुरु पूजन- श्री विरदीचंदजी धारिवाल परिवार सनावडा-बाडमेर-सूरत
कामली- श्री मांगीलालजी भंवरलालजी धारिवाल, बाडमेर
आसन- श्री बाबूलालजी बंशीधरजी संकलेचा, बाडमेर
वासकुंपा- श्रीमती उदीदेवी मांगीलालजी धारिवाल, बाडमेर
नामकरण- श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड़, तिरुपातुर

**पूज्य गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. को उपकरण वहोराने के लाभार्थी**

वर्धमान विद्या यंत्र- श्री भंवरलालजी विरदीचंदजी छाजेड, बाडमेर
स्वर्णमाला- संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर
गुरु पूजन- श्री तेजराजजी धुडाजी कांकरिया, हस्ते महावीरजी कांकरिया, सिवाना-हुबली (सांसारिक परिवार)
कामली- श्री गौतमचंदजी भगवानदासजी बोहरा, बाडमेर
आसन- श्री जीवराजजी ऊकचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचोर
वासकुंपा- श्री बाबूलालजी टी. बोथरा, बाडमेर
नामकरण- श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, सूरत

## फलोदी में बच्छावत परिवार द्वारा प्रतिष्ठा संपन्न

## बाड़मेर में महावीर वाटिका श्री महावीर जिनालय की प्रतिष्ठा संपन्न

## धोरीमन्ना में दीक्षा संपन्न कु. रवीना बनी साध्वी तन्मयरुचिश्रीजी म.

## श्री गौतमस्वामी गुरु तीर्थ गुणायाजी में शिलान्यास समारोह

# श्री खेतिया नगरे
# चातुर्मास प्रवेश समारोह

**मंगल मुहूर्त्त : आषाढ़ सुदि 6, बुधवार ता. 6 जुलाई 2022 प्रातः 8.00 बजे**

आज्ञा प्रदाता
पू. गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक
खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्य आशीर्वाद
प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चंपाश्रीजी म.सा.

चातुर्मास पावन निश्रा
*प. पू. महत्तरापद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा.*
*पू. साध्वी जितेन्द्रश्रीजी म. सा. की शिष्या*
*धवल यशस्वी*
**प. पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.**
प. पू. विश्वरत्नाश्रीजी म.सा., प. पू. रश्मिरेखाश्रीजी म.सा.
प. पू. चारुलताश्रीजी म.सा., प. पू. चारित्रप्रियाश्रीजी म.सा.
प. पू. वीरांशप्रभाश्रीजी म.सा.

## सकल श्री संघ से पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

❁ निवेदक व चातुर्मास स्थल ❁

## श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक खरतरगच्छ संघ खेतिया

महात्मा गांधी मार्ग, पो. खेतिया-451881, जिला बड़वानी (म.प्र.)

| महीपाल बनेचंदजी नाहर | प्रदीप मन्नालालजी भंसाली | पारस राणुलालजी चोपड़ा | विनोद गणेशमलजी बाफणा | अल्पेश सोनराजजी चोपड़ा |
|---|---|---|---|---|
| अध्यक्ष | उपाध्यक्ष | उपाध्यक्ष | कोषाध्यक्ष | मंत्री |
| 9425416210 | 9630373143 | 9424058117 | 9752782114 | 9406688377 |

श्री मुनिसुव्रतस्वामिने नमः
श्री दादा गुरुभ्यो नमः

# श्री सूरत महानगरे

## चातुर्मास हेतु भव्य प्रवेश समारोह

आज्ञा प्रदाता
पू. गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति
आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पावन निश्रा
प. पू. चम्पा जितेन्द्र ज्योति
धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
प. पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म.सा., प. पू. संयमलताश्रीजी म.सा.
प. पू. ऋजुप्रज्ञाश्रीजी म.सा., प. पू. नम्रप्रज्ञाश्रीजी म.सा.
प. पू. ऋद्धिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

**मंगल मुहूर्त्त : आषाढ़ सुदि 7, बुधवार ता. 6 जुलाई 2022 प्रातः 8.00 बजे**

## सकल श्री संघ से पधारने का हार्दिक निवेदन है।

:: निवेदक व चातुर्मास स्थल ::

**बाड़मेर जैन श्री संघ कुशल दर्शन सोसायटी**
पर्वत पाटिया, सूरत (गुजरात)

श्री महावीराय नमः

।।श्री शान्तिनाथाय नमः।।

श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः

अनंत लब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः
खरतर बिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशलसूरिभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः

पधारो सा

# श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुम्बई

## चातुर्मास प्रवेश

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर

**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.** की आज्ञानुवर्तिनी

प.पू. महत्तरापद विभूषिता **श्री चंपाश्रीजी म.सा.** की विदुषी शिष्या

मारवाड़ ज्योति, खानदेश ज्योति गणिनी प्रवरा

## श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा,

प.पू. स्नेह सुरभि, खानदेश रत्ना **श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. (भागु म.सा.)**

प. पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.सा., प. पू. साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म.सा., प. पू. साध्वी श्री अभिनंदिताश्रीजी म.सा.,
प. पू. साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म.सा., प. पू. साध्वी श्री नयनंदिताश्रीजी म.सा.,
प. पू. साध्वी श्री प्रेयनंदिताश्रीजी म.सा., प. पू. साध्वी श्री विश्रुतप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 9 का

**भव्य चातुर्मास प्रवेश**
**11 जुलाई 2022, सोमवार**

को मुख्य मार्गों से होते हुए प्रवेश होगा।
आप सपरिवार इस शुभ अवसर पर पधार
कर जिनशासन की शोभा बढ़ावे।

विनीत

**श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ-मुम्बई**

75/77, नियो ऑर्नेट बिल्डिंग, दूसरा माला,
नानुभाई देसाई रोड़, पहला पारसीवाड़ा कोर्नर, मुंबई-400 004 ( महा. )

✤ सम्पर्क सूत्र ✤

| मांगीलाल जे. जैन (मौलाणी) | कांतिलाल बोकड़िया | धनपत कानुंगो |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | महामंत्री | कोषाध्यक्ष |
| 98206 21382 | 93222 85962 | 98921 65750 |

श्री आदिनाथाय नमः

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः

अनंत लब्धिनिधानाय श्री गौतम स्वामिने नमः

खरतर बिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्र सूरिभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः

श्री महावीर स्वामिने नमः

# मालेगाँव की धन्यधरा पर

# चातुर्मासिक प्रवेशोत्सव पर आमंत्रण

## दिनांक 1 जुलाई 2022, शुक्रवार, आषाढ़ सुदि 2

आज्ञा प्रदाता

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**पावन निश्रा**

प. पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या प.पू. गणिनी प्रवरा खानदेश ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.,

प. पू. स्नेह सुरभि खानदेश रत्ना श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा.की चरणाश्रिता

**प.पू. हर्षपूर्णाश्रीजी म.सा., प. पू. प्रियनंदिताश्रीजी म.सा.**

**प.पू. अर्पितप्रज्ञाश्रीजी म.सा., प.पू. विनम्रप्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा 4**

*सर्व मंगलकारी चातुर्मास प्रवेश के पुनित अवसर पर पधारने हेतु सकल श्री संघ को भावभरा हार्दिक आमंत्रण*

निवेदक

## श्री जिनकुशल सूरि दादावाड़ी बाड़मेर ट्रस्ट

मालेगाँव जिला-नाशिक 423203

| | |
|---|---|
| शांतिलाल छाजेड़ | कैलाशचंद मेहता |
| 9422271951 | 9370270223 |

श्री महावीरस्वामिने नमः
अनन्तलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः
दादा श्री जिनदत्त-मणिधारीचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्र गुरुभ्यो नमः
गणनायक श्री सुखसागर गुरुभ्यो नमः

# हैदराबाद नगर (फिलखाना) की धर्मधरा पर

## भव्यातिभव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश प्रसंगे

## शुक्रवार, 1 जुलाई 2022, आषाढ़ सुदि 2

स्नेह आमंत्रण

आज्ञा प्रदाता
पू. गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्य कृपा
प. पू. महानआत्मसाधिका श्री अनुभवश्रीजी म.सा.
प. पू. सुप्रसिद्धव्याख्यात्री
गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा.

प्रत्यक्ष आशीर्वाद
प. पू. भगिनीवर्या श्री कल्पलताश्रीजी म.सा.
आपका चातुर्मास चौहटन में हैं।

**पावन निश्रा**

प. पू. प्रसिद्धव्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें

प. पू. श्री प्रियंवदाश्रीजी म.सा.
प. पू. श्री शुद्धांजनाश्रीजी म.सा.
प. पू. श्री योगांजनाश्रीजी म.सा.
प. पू. श्री प्रमुदिताश्रीजी म.सा.
प. पू. श्री संवेगप्रियाश्रीजी म.सा.
प. पू. श्री मननप्रियाश्रीजी म.सा.

**श्री महावीर स्वामी जैन श्वेताम्बर संघ, फीलखाना, हैदराबाद**

अध्यक्ष
मदनराज साहजी

मंत्री
हस्तीमल हुंडिया

**खरतरगच्छ जैन श्री संघ**

अध्यक्ष
ललितकुमार संकलेचा

मंत्री
जसराज बाफना

❊ चातुर्मास संयोजक ❊
कांतिलाल संकलेचा, विक्रमसिंह ढड्ढा

❊ सह संयोजक ❊
रानमल बोकड़िया, किशोर कटारिया सिंघवी
राजु बोथरा

**सहयोगी संस्था**
✿ अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद
✿ अ.भा. खरतरगच्छ महिला परिषद
✿ ज्ञान वाटिका

❖ चातुर्मास स्थल ❖
**महावीर भवन**
फीलखाना, हैदराबाद-500012

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥ श्री वासुपूज्य स्वामिने नमः ॥ श्री महावीरस्वामिने नमः॥

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतम स्वामिने नमः
खरतरबिरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

# झीलों की नगरी उदयपुर में

## भव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

# आमंत्रण

**आज्ञा प्रदाता**
प.पू. गच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**दिव्यकृपा**
प. पूज्या गुरुवर्या आगम ज्योति
स्व. प्र. श्री प्रमोद श्रीजी म.सा.

**शुभ मंगल प्रवेश**
आषाढ़ सुदि 11, रविवार,
9 जुलाई 2022

**प्रत्यक्ष कृपा**
प. पूजनीया श्रमणीरत्ना माताजी म.
श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., प.पू. बहिन
म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

**पावन सान्निध्य**

परम पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा की सुशिष्या
प. पू. साध्वी श्री डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.
प.पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म.सा.
प.पू. साध्वी श्री योगरुचि श्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास प्रवेश की मंगल वेला में आप पधार कर संघ को लाभान्वित करें।

**विनीत**

**श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्यजी महाराज का मन्दिर ट्रस्ट**
**श्री जिनदत्तसूरि दादावाड़ी**
मेवाड़ मोटर्स लिंक रोड़, सूरजपोल के बाहर, उदयपुर (राज.)

मोहनसिंह दलाल (अध्यक्ष)
94137 71687

राज लोढ़ा (मंत्री)
94141 68966

॥ श्री मुनिसुव्रत स्वामिने नमः॥

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

# श्री सूरत–पाल में कुशल कांति खरतरगच्छ जैन संघ

## कुशल वाटिका में चातुर्मास प्रवेश समारोह

**11 जुलाई 2022, सोमवार, प्रातः 8.30 बजे**

**आज्ञा प्रदाता**

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**आशीर्वाद**

प. पू. बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

**चातुर्मास पावन निश्रा**

प. पू. बहिन म. साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या

**पू. साध्वी श्री डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म.सा.,**
**पू. साध्वी श्री डॉ. विज्ञांजनाश्रीजी म.सा.**
**पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म.सा.** ठाणा 3

**प्रवेश के शुभ अवसर पर**
**सकल संघ से पधारने का हार्दिक अनुरोध हैं।**

निवेदक

## श्री कुशल कान्ति खरतरगच्छ जैन संघ

कुशल वाटिका, पाल, सूरत–395009 (गुजरात)

| ओमप्रकाश मण्डोवरा | घेवरचन्द मरड़िया | गौतमचन्द श्रीश्रीमाल |
|---|---|---|
| 93777 93001 | 94286 30935 | 90991 60959 |

## खरतरगच्छाधिपतिश्री का चौहटन में मंगल प्रवेश

चौहटन 30 अप्रैल। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म. सा., गणि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा व पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि साधु-साध्वी भगवन्तों का दि. 30 अप्रेल को चौहटन में गाजे- बाजे के साथ मंगल प्रवेश हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रवेश का वरघोड़ा बाल मंदिर स्कूल से प्रारम्भ हुआ और दादावाड़ी से कस्बे के मुख्य मार्गों से होते हुए श्री शान्तिनाथ प्रवचन मंडप पहुँच कर धर्मसभा में बदल गया।

सामूहिक वंदन फिर गुरुदेव के मुखारविन्द से मंगलाचरण हुआ और सभी ने जिन शासन ध्वज का सामूहिक गान किया। धर्मसभा को नितेश सेठिया, पवन धारीवाल, कोमल धारीवाल आदि ने सम्बोधित किया। महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। निर्मला, संस्कार वाटिका की बालिकाओं, कैलाश सेठिया आदि ने स्तवन प्रस्तुत किये।

पूज्य खरतरगच्छाधिति आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी ने परमात्मा महावीर के शासन का महत्व बताते हुए सबको आह्वान किया कि कषाय और राग-द्वेष मानव जीवन के लिए अभिशाप है। चौहटन के कुलदीपक मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी ने दीक्षा के बाद प्रथम बार चौहटन में प्रवेश पर अपने प्रवचन में बहुत ही सरल वाणी से संयम की व्याख्या करते हुए सभी को अपने भविष्य को संवारने हेतु आत्म कल्याण के लिए पुरुषार्थ करने का आह्वान किया। गणिवर्य मनितप्रभसागरजी और साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी ने अपने प्रवचन में श्रावक धर्म की मर्यादाओं और राग-द्वेष से मुक्त सरल जीवन बनाने पर विस्तार से व्याख्या की। अतिथियों का श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया गया, प्रभावना रखी गई। रमेशजी जेठमल जी सेठिया परिवार की ओर से स्वामीवात्सल्य का आयोजन रखा गया

## खरतरगच्छ युवा परिषद और महिला परिषद की शाखा का गठन

चौहटन 30 अप्रैल। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की निश्रा में चौहटन में खरतरगच्छ युवा परिषद और खरतरगच्छ महिला परिषद की चौहटन शाखा का गठन किया गया।

परिषद के गठन में अरविन्द धारीवाल को संरक्षक, गौतम बी. धारीवाल को अध्यक्ष, लूणकरण सेठिया को उपाध्यक्ष, मांगीलाल सेठिया को कोषाध्यक्ष, महावीर एम. धारीवाल को सचिव, पवन धारीवाल को सहसचिव, हंसराज सिंघवी को मीडिया प्रभारी के रूप में सर्वसम्मति से मनोनयन किया गया।

खरतरगच्छ महिला परिषद के गठन में लीला सेठिया को अध्यक्षा, सुशीला भंसाली को उपाध्यक्षा, मंजू सेठिया को कोषाध्यक्षा, दीपिका धारीवाल को सचिव, उषा धारीवाल को सहसचिव तथा कंचन भंसाली को प्रचार मंत्री मनोनीत किया गया। पूज्य आचार्यश्री ने दोनों शाखाओं के पदाधिकारियों और सदस्यों को संकल्प दिलाया और शासन और समाज के सेवा कार्यों और प्रकल्पों में निरन्तर सक्रिय रहने का आह्वान करते हुए सभी को आशीर्वाद दिया।

# कुशल कॉम्पलेक्ष में परमात्मा बिराजित हुए

रामजी का गोल 24 अप्रैल। पू. खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा व साध्वीवर्या प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की सानिध्यता में गृह मन्दिर में प्रभु सुपार्श्वनाथ, दादा कुशल गुरुदेव व नाकोड़ा भैरव देव प्रतिमा प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

प्रभु प्रतिमा, दादा गुरुदेव व नाकोड़ा भैरव देव प्रतिमा की प्रवेश शोभायात्रा श्री आर्य गुण गुरु कृपा जैन तीर्थ से प्रारंभ होकर गाजे-बाजे के साथ नवनिर्मित कुशल काम्पलेक्स पहुँचे। जहाँ शोभायात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हुई। उपस्थित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि प्रभु व गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा, आत्मिय समर्पण, भक्ति भावना होने पर सच्चा आशीर्वाद प्राप्त होता है।

बाड़मेर जिले के सीमा पर रामजी का गोल में श्री पारसमलजी धारीवाल की प्रभु भक्ति, गुरु भक्ति, साधर्मिक भक्ति, सेवा कार्य अनुमोदनीय है। दीक्षार्थी रविना बोथरा का अभिनन्दन किया गया। श्री पारसमल धारीवाल परिवार द्वारा नवनिर्मित कुशल काम्पलेक्स उद्घाटन, नवनिर्मित गृह मन्दिर में सुपार्श्वनाथ भगवान, दादा कुशलसूरि गुरुदेव, श्री नाकोड़ा भैरव देव प्रतिमा प्रतिष्ठा विजय मुहूर्त में सम्पन्न हुई।

प्रतिष्ठा पश्चात् स्वामीवात्सलय, दोपहर को दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा का आयोजन रखा गया। बाड़मेर, गुड़ामालानी, धोरीमन्ना, चौहटन, अहमदाबाद आदि भारत वर्ष के अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु पधारे।

# खरतरगच्छाचार्य जिनमनोज्ञसूरिजी के चौहटन प्रवेश पर उल्लास

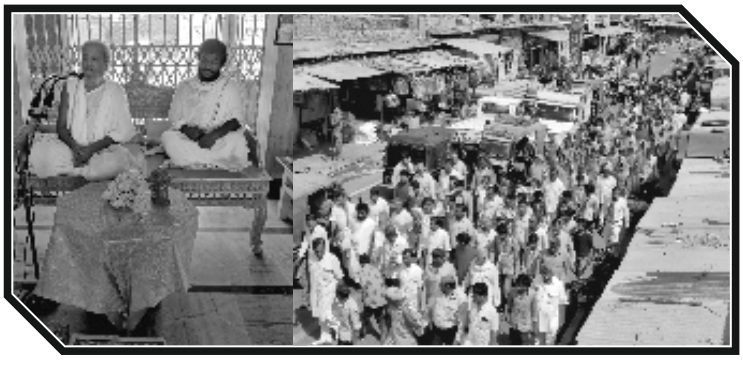

चौहटन 17 अप्रैल। पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म. और मुनि नयज्ञसागरजी म. के चौहटन नगर प्रवेश पर जैन समुदाय द्वारा पलक पावड़े बिछाकर स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। डोसी पेट्रोल पंप से ढोल नगाड़ों के साथ गुरुदेव जिनमनोज्ञसूरिजी का स्वागत- वंदन करते हुए जुलूस के रूप में कस्बे के मुख्य मार्ग से श्री शान्तिनाथ उपासरे पहुँचे जहाँ धर्मसभा हुई।

सभी ने गुरुदेव को सामूहिक वंदन किया। फिर मंगलाचरण के साथ जैन राष्ट्रगान हुआ। धर्मसभा को अरविन्द धारीवाल, मदनलाल मालू, डॉ मोहनलाल डोसी, पवन धारीवाल ने सम्बोधित किया। महिला मंडल, मनीषा सेठिया और कैलाश सेठिया ने भजन प्रस्तुत किये।

आचार्य भगवंत जिनमनोज्ञसूरिजी ने अपने प्रवचन में राग-द्वेष और अहंकार को त्यागते हुए मिलजुल कर एक रहने एवं शासन की प्रभावना करने का आह्वान किया। उन्होंने चौहटन जैन समाज के प्राचीन इतिहास तथा तत्कालीन लोगों के त्याग-तपस्या और पुरुषार्थ का स्मरण कराते हुए वर्तमान पीढ़ी को उनसे सीख लेने एवं समुदाय को एक सूत्र में रखने का सन्देश दिया।

## 20 विरहमान तीर्थकरों का जन्म कल्याणक मनाया

चूलै में उल्लास के साथ पू. गच्छाधिपतिश्री की आज्ञानुवर्तिनी पू. सज्जनमणि शशिप्रभाश्रीजी म.सा की शिष्या पूज्या साध्वी श्रद्धान्विताश्रीजी म.सा आदि ठाणा की निश्रा में मनाया गया। प्रथम श्रेणी में जन्म अभिषेक पश्चात् 18 परिवारों द्वारा 18 अभिषेक हुए। तत्पश्चात् साध्वीजी द्वारा महाविदेह क्षेत्र एवं सीमंधर स्वामी का महत्व बताते हुवे विशेष प्रकाश डाला गया। पूरे कार्यक्रम में आदिनाथ जैन मंडल चूलै के सदस्य द्वारा संगीत से सबको भाव विभोर किया। विधि विधान फलोदी निवासी श्री राजेशजी हीरालालजी गोलछा द्वारा कराया गया। कार्यक्रम के पश्चात श्री रानुलालजी देवराजजी गुलेच्छा श्री मोहनजी मनोजजी द्वारा सभी को साधर्मिक भक्ति का निवेदन किया गया।

## राणी गांव में निकली शोभायात्रा

राणीगांव 14 अप्रेल। पूज्य खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में राणीगांव में भगवान् महावीर के जन्म कल्याणक महोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष में प्रात: 8 बजे सुमतिनाथ जिनालय से भव्य वरघोड़े में विविध झाकियां के द्वारा भगवान महावीर के जीवन के समता सहजता करुणा को उकेरा गया। भव्य वरघोड़ा गाँव के प्रमुख मार्गों से होते हुए मंदिर प्रांगण में पहुंचा जहां पर धर्मसभा का आयोजन हुआ। जिसमे पूज्य आचार्यश्री ने कहा कि आज के ही दिन तिथि में हमने अपने शासनाधीश्वर को पाया था। वर्तमान में जितने भी जैनी है उनकी सर्व प्रथम पहचान भगवान महावीर से हैं।

राणीगांव नगर में प्रतिष्ठा के बाद प्रथम बार भगवान महावीर के जन्म कल्याणक महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन भव्यातिभव्य हुआ।

प्रेषक- कपिल मालू

## भोपाल में दीक्षा संपन्न

भोपाल 17 अप्रेल। कोहेफिजा, भोपाल नगर में पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा सहित 25 साधु साध्वियों के पावन सानिध्य में मुमुक्षु प्रभृति जी ओस्तवाल की भागवती दीक्षा उल्लासपूर्वक संपन्न हुई। नूतन दीक्षार्थी का नामकरण पूज्या साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म. की शिष्या नूतन साध्वी प्रणवनिधिश्रीजी म. घोषित किया गया।

## हमारे नये संरक्षक

卐 सद्गृहस्थ धार्मिक सामाजिक सेवक श्री आर. एल. जैन, उदयपुर

## श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट कार्यकारिणी का गठन

श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी ट्रस्ट बसवनगुड़ी, बैंगलोर की आगामी तीन वर्षीय कार्यकाल हेतु नयी कार्यकारिणी का गठन अध्यक्ष निर्भयलाल गुलेच्छा के द्वारा किया गया। नयी कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों का अध्यक्ष निर्भयलाल गुलेच्छा ने हार्दिक स्वागत कर बधाई के साथ यशस्वी कार्यकाल हेतु मंगल शुभकामनाएं प्रदान की। महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने सभी कार्यकारिणी सदस्यों को आगामी कार्यकाल के लिए अनेक कार्यक्रमों की घोषणा की। ट्रस्ट की नवीन कार्यकारिणी की प्रथम मीटिंग में आगामी 2022 के पूज्य साध्वी मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा के चातुर्मास हेतु विस्तृत चर्चा की। और अनेक प्रस्ताव पारित किए गए।

नवीन समिति में अध्यक्ष निर्भयलाल गुलेच्छा ने उपाध्यक्ष पद पर बाबुलाल भंसाली, तेजराज श्रीश्रीमाल (मालाणी), महामंत्री के पद पर संघवी कुशलराज गुलेच्छा, कोषाध्यक्ष के रूप में रंजीतमल ललवाणी और सहमंत्री प्रकाशचंद भंसाली को नियुक्त किया तथा संघ के प्रवक्ता के रुप में अरविन्द कोठारी को नियुक्त किया गया। साथ ही पन्द्रह कार्यकारिणी सदस्यों का चयन किया। संघ के समस्त सदस्यों ने नवनिर्वाचित समिति को हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान की। मीटिंग के अन्त में समस्त सदस्यों को धन्यवाद महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने व्यक्त किया।

## ह्रींकार तीर्थ में नवपद ओली आराधना

ह्रींकार तीर्थ 16 अप्रेल। आंध्रप्रदेश में श्री ह्रींकार तीर्थ पर शाश्वती नवपद ओली की सामूहिक आराधना का कार्यक्रम संघवी जडावीबाई छगनराजजी वजावत परिवार आहोर द्वारा पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्यायें पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म. सा., पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की निश्रा में आयोजित हुआ। गुंटूर विजयवाडा विशाखापत्तनम राजमंदिरी काकीनाडा हैदराबाद नैलोर एलूर चैन्नई आदि शहरों से करीब 125 आराधकों ने आराधना की। इस आयोजन में प्रतिदिन पूजा जिसमें श्री महावीर स्वामी, श्री सिद्धचक्र महापूजन, दादा जिनकुशलसूरिजी पूजा, गुरुदेव, राजेन्द्रसूरि, भक्तामर स्तोत्र पाठ स्नात्र महोत्सव, प्रवचन, आरती आदि कार्यक्रम हुए।

पूरे आयोजन में श्री जैन युवा संगठन गुंटूर ने व्यवस्था में सहयोग दिया और ह्रींकार तीर्थ के सचिव सांकलचंद जी और गुंटूर के श्रावक गौतम जी बागरेचा का विशेष सहयोग रहा। संगीतकार नैतिक भाई भक्ति की रमझट जमाई। तारीख 16-4-2022 सब आराधकों ने शातापूर्वक पारणा करके अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया।

-राजेश एम. बाफना, ललित डाकलिया

## जयपुर चातुर्मास प्रवेश 10 जुलाई 2022 को

पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूज्या साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश आषाढ सुदि 11 रविवार ता. 10 जुलाई 2022 को होगा।

पूज्य श्री अपने शिष्य मंडल के साथ बाडमेर में ता. 8 मई को अंजनशलाका प्रतिष्ठा तथा अपने दो शिष्यों को उपाध्याय व गणि पद प्रदान करके बाद में फलोदी में ता. 1 जून को प्रतिष्ठा कराकर जयपुर की ओर विहार करेंगे। वे अजमेर, मालपुरा होते हुए जयपुर पधारेंगे।

## केयुप केएमपी की हर नई शाखा को अनुदान

बैंगलोर निवासी संघवी श्री विजयराजजी डोसी परिवार ने अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् तथा अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् की स्थापित होने वाली हर नई शाखा को 3600 रु. के विशिष्ट अनुदान अर्पण करने की घोषणा की है। यह अनुदान संघवण प्रेमलता देवी विजयराजजी हंसराजजी कुशलराज डोसी, खजवाणा निवासी हाल बैंगलोर के नाम से अर्पण किया जा रहा है।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा इससे गच्छ के युवाओं व महिलाओं के इस राष्ट्रीय संगठन को और गति मिलेगी तथा गच्छ-विकास के कार्य होंगे।

## बाछड़ाऊ में केएमपी व केबीपी का गठन

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से उनकी निश्रा में बाछडाउ जिला बाडमेर में अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् तथा अखिल भारतीय खरतरगच्छ बालिका परिषद् की शाखा का गठन किया गया। केएमपी में श्रीमती मंजू देवी संखलेचा-अध्यक्षा, खुश्बू देवी बोथरा को उपाध्यक्षा, कविता देवी भालू को महामंत्री एवं मीनादेवी मालू कोषाध्यक्षा बने।

जबकि बालिका परिषद् के संगीता कुमारी मालू अध्यक्षा नियुक्त हुए कुमारी पायल बोथरा को उपाध्यक्षा, कु. प्रियंका को महामंत्री कु. शिवाली संखलेचा को कोषाध्यक्षा व कविता कु. मालू को प्रचारमंत्री बनाया गया।

## पालीताना में वर्षीतप के पारणे संपन्न

पालीताना 3 मई। श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा के अनुसार शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी द्वारा वर्षीतप के पारणे अत्यन्त आनंद मंगल के साथ संपन्न हुए।

इस वर्ष वैशाख सुदि तृतीया की वृद्धि होने के कारण खरतरगच्छ की शास्त्रीय सुविहित परम्परा के अनुसार पहली तीज को अक्षय तृतीया मनाई गई। पूरे भारत में सर्वत्र पहली तीज को ही अक्षय तृतीया मनाई गई। तपागच्छ की परम्परा के अनुसार दूसरी तीज को अक्षय तृतीया के पारणे हुए।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री ने पेढी के साथ लगातार पत्र व्यवहार किया। पारणे का लाभ शेठ श्री मोहनचंदजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार मूल फलोदी वर्तमान चेन्नई वालों ने लिया। सिद्धाचल तीर्थ में तपस्वियों द्वारा मूलनायक दादा आदिनाथ के इक्षुरस के पक्षाल की व्यवस्था पेढी द्वारा की गई। साथ ही पारणा भवन में पारणे का आयोजन किया।

पूज्य आचार्यश्री ने खरतरगच्छ की परम्परा के अनुसार व्यवस्था करने पर पेढी को धन्यवाद पत्र दिया।

# फलोदी में प्रतिष्ठा संपन्न

फलोदी 1 जून। फलोदी नगर में परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म. सा. की शिष्या पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी डॉ. श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री योगरुचिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री तन्मयरुचिश्रीजी म. तथा पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में श्री नेमिनाथ परमात्मा के शिखरबद्ध मंदिर की प्रतिष्ठा ज्येष्ठ सुदि 2 बुधवार ता. 1 जून 2022 को संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ ता. 30 मई 2022 को हुआ। उस दिन पूज्य गुरुवरों का भव्य प्रवेश संपन्न हुआ। कुंभस्थापना आदि विधि विधान संपन्न हुए। ता. 31 मई को भव्य वरघोडे का आयोजन हुआ। ता. 1 जून को शुभ मुहूर्त्त में प्रतिष्ठा विधान संपन्न हुआ।

इस मंदिर का निर्माण श्री लालचंदजी नेमीचंदजी बच्छावत परिवार द्वारा वि. 1999 में कराया गया था। इसके जीर्णोद्धार का संपूर्ण लाभ पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से उनके सांसारिक भ्राता श्री लालचंदजी के पुत्र श्री रतनचंदजी निर्मला देवी के सुपुत्र श्री रवीन्द्र बच्छावत–सौ. सीमादेवी ने लिया।

चौदह महिनों तक लगातार कार्य चला और मंदिर संपूर्ण रूप से तैयार हो गया। फलोदी नगर का यह पहला शिखर बद्ध मंदिर है।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने कहा– यह पहला ऐसा मंदिर बना है, जिसमें प्रतिष्ठा के बाद कोई काम शेष नहीं है। यहाँ तक कि घिसाई का कार्य भी पूरा हो चुका है। उन्होंने रवीन्द्रकुमार सौ. सीमा देवी की श्रद्धा और समर्पण की अनुमोदना की।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने पुराने संस्मरण सुनाते हुए बच्छावत परिवार को वर्धापना दी। उन्होंने कहा– आज श्री रतनचंदजी का सहज स्मरण हो आता है। आज वे अपने पुत्र का पुरुषार्थ निहारते तो हृदय में कितना आनंद होता। साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. की दीक्षा के संबंध में संस्मरण सुनाये।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म. ने कहा– यह सौभाग्य है कि मेरा जन्म इसी बच्छावत परिवार में हुआ है, जिन्होंने जिन मंदिर का निर्माण कराया। उन्होंने दीक्षा पूर्व के नेमिनाथ मंदिर से जुडे अपने संस्मरण सुनाये।

जीर्णोद्धार की प्रेरिका पू. साध्वी डॉ. श्री विज्ञांजनाश्रीजी ने अपने सांसारिक भ्राता पिंकू (रवीन्द्र) बच्छावत को वर्धापना दी। उन्होंने कहा–बच्छावत परिवार इसी प्रकार शासन के कार्य निरन्तर करता रहे।

→

# सिंधनूर में दीक्षा संपन्न

सिंधनूर 12 मई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4 एवं गच्छगणिनी पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका दक्षिण प्रभाविका श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. आदि ठाना 8 का दि. 8.5.2022 रविवार को सिंधनूर की पुण्य धरा पर मुमुक्षु पूजा नाहर की प्रव्रज्या हेतु भव्य प्रवेश हुआ।

मंगल स्वरूप मुमक्षु पूजा नाहर एवं समस्त नगरवासी महिलाओं ने कलश के द्वारा प्रदक्षिणा दी गयी। प्रवेश के पश्चात् धर्मसभा का आयोजन किया गया। पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ने फरमाया कि संयम ही मानव जीवन का सार है। मुक्ति पाने का एकमात्र राजमार्ग संयम है। मुमुक्षु पूजा ने जो निर्णय लिया वह सराहनीय है। साध्वी प्रियवर्षांजनाश्रीजी म. ने संगीत के माध्यम से मुमुक्षु कु. पूजा को हितशिक्षा दी।

कु. पूजा ने कहा कि सालों का सपना पूरा हुआ। आज मेरा रोम-रोम रोमांचित है क्योंकि मेरे गुरु भगवंत आज मेरे घर आंगन में पधारे हैं। मेरे परिवार की विनती स्वीकार करके पधारे उसके लिए मैं कृतज्ञता अर्पण करती हूँ। गणिवर्य मनीषप्रभसागरजी म. ने कहा कि सिंधनूर ऐसी पुण्य धरा है जहाँ से 6-6 मुमुक्षुओं ने राजपथ पर प्रयाण किया। यह नाहर परिवार पुण्यशाली है।

द्वितीय दिन प्रातः वर्धमान शक्रस्तव का भव्य अभिषेक तत्पश्चात दोपहर में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे डॉ. विधायक, एम.एल.ए. आदि का बहुमान दीक्षार्थी परिवार द्वारा किया गया। रात को सिंधनूर के बच्चों के द्वारा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

चतुर्थ दिन प्रातः 8 बजे भव्य वर्षीदान का वरघोडा निकाला गया। जिसमें समस्त सिंधनूर नगर हाजिर था। गंगावती, कम्पली, कोप्पल, बेल्लारी, हुबली, रायचूर, मानवी, होस्पेट, आदोनी आदि नगरों से बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति थी। मुमक्षु पूजा नाहर ने वर्षीदान दिया।

शाम को अंतिम वायणा एवं रात को अभिनंदन समारोह में ईशान दोसी भाविक शाह एवं हर्षित शाह ने सभी को गदगद कर दिया।

दि. 12.5.2022 को प्रातः 8 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ हुई। गणिवर्य जी ने सुचारु रूप से समझाते हुए विधि करवाई। शुभ मुहूर्त में मुमुक्षु कु. पूजा को रजोहरण प्रदान किया। जैसे ही पूजा के हाथों में रजोहरण आया पैर थिरकने लगे, रोम-रोम नाचने लगा, जबरदस्त झूमते हुए पूजा ने रजोहरण को बधाया।

वेश परिवर्तन के पश्चात् नूतन साध्वीजी के परिधान में मुमक्षु पूजा का नया नाम-साध्वी प्रियक्रियांजनाश्रीजी रखा गया।

संपूर्ण दीक्षा का लाभ मुमुक्षु पूजा के सांसारिक परिवार सिंधनूर निवासी श्री मदनलालजी, कुंदनमलजी, सुनीलकुमारजी अनिलकुमारजी जैनम नाहर ने लिया।

-पूजा मेहता, जोधपुर

## फलोदी में....

ता. 2 जून को द्वारोद्घाटन के साथ दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। तीनों दिन श्री अमरचंदजी लालचंदजी नेमीचंदजी बच्छावत परिवार द्वारा स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। तोरण का लाभ पू. गणिनी श्री सुलोचना श्रीजी की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियश्रेयांजनाश्रीजी की प्रेरणा से उनके सांसारिक परिवार श्रीमती संपतबाई नेमीचंदजी बच्छावत परिवार ने लिया। प्रतिष्ठा के इस पावन अवसर पर बाहर से बडी संख्या में श्रद्धालुओं का पदार्पण हुआ। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, फलोदी व कई परिवारों द्वारा श्री रवीन्द्रकुमार बच्छावत का अभिनंदन किया गया।

बाहर से पधारे महानुभावों का रवीन्द्रकुमार बच्छावत द्वारा बहुमान किया गया।

## फलोदी में दादा गुरुदेव की दर्शनीय मूर्ति स्थापित

फलोदी। स्थानीय सुप्रसिद्ध गूंदी उपाश्रय में जहां अकबर प्रतिबोधक दादा गुरुदेव श्री जिनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. स्वयं विराजे थे। उस पाट के पीछे दिवार में गोखले में पूज्य खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के पावन कर कमलों द्वारा दादा गुरुदेव की दर्शनीय प्रतिमा की स्थापना की गई। इस अवसर श्रीसंघ एवं अनेक गुरुभक्त उपस्थित रहे।

## भादरेश में देव-देवी की प्रतिष्ठा संपन्न

भादरेश 12 मई। भादरेश नगर में पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. व मुनि नयज्ञसागरजी म.सा. एवं पू. साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा व पू. साध्वी अमितगुणाश्रीजी म.सा. की निश्रा में भादरेश नगर में श्री घंटाकर्ण महावीर देव व श्री पद्मावती देवी की प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन हुआ।

भादरेश नगर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय में साधु-साध्वीवृन्द की पावन निश्रा में अष्टमंगल पूजा, घंटाकर्ण महावीर देव व पद्मावती देवी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा प्रातः शुभ मुहूर्त में विधि-विधान के साथ प्रतिष्ठित की गई। पद्मावती देवी की मूर्ति विराजमान के लाभार्थी जेठमल हजारीमल छाजेड़ परिवार भादरेश व घंटाकर्ण महावीर देव मूर्ति विराजमान के लाभार्थी भगवानदास छाजेड़ परिवार भादरेश द्वारा लिया गया। इस कार्यक्रम के बाद धर्मसभा का आयोजन हुआ, जिसमें सकल जैन श्री संघ भादरेश की ओर से साधु-साध्वी भगवन्त को काम्बली ओढाई गई व संघ स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया। इस प्रतिष्ठा कार्यक्रम में पुरे भाटीपा व बाड़मेर क्षेत्र से सैकड़ों गुरुभक्त पधारे। -प्रेषक- कपिल मालू, कैलाश भादरेश

## केएमपी का गठन

**पाली ३ मई।** पू. अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की

आज्ञानुवर्तिनी सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. सा. की विदुषी शिष्या पूज्या साध्वी कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में उनकी प्रेरणा से दिनांक 03/05/2022 को अनुभव स्मारक संस्थान पाली में केएमपी पाली शाखा का गठन किया गया। अध्यक्षा श्रीमती संगीता संखलेचा और सचिव श्रीमती कल्पना डोसी मनोनीत किये गए। गठन के समय चातुर्मास कमेटी के संयोजक श्री जगदीशजी बोथरा, सुनीलजी लूणिया, श्रीमती सुमित्रा जी डोसी आदि उपस्थित थे।

**नंदुरबार।** पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा, मंगल आशीर्वाद व

गच्छगणिनी पू. श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., पू. श्री पूर्णप्रभाश्री जी म. की निश्रा में उनकी प्रेरणा से नंदुरबार में खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा का विधिवत गठन हुआ। अध्यक्षा- श्रीमती चंदनबालाजी बाफना, कार्यकारी अध्यक्षा- श्रीमती मंजुजी कवाड, उपाध्यक्षा- संगीताजी बाफना, सचिव- श्रीमती भारतीजी डागा, सहसचिव- श्रीमती रत्नीजी तातेड, कोषाध्यक्षा- श्रीमती रेखाजी भंसाली को मनोनीत किया गया।

**उत्तर हावडा।** श्रद्धेय परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म. सा. की प्रेरणा, मंगल

आशीर्वाद व गच्छगणिनी पू. श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म., पू. प्रियलताश्रीजी म. व पू. प्रियवंदनाश्रीजी म. की प्रेरणा व निश्रा में उत्तर हावडा में खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा का विधिवत गठन हुआ। सभी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं...

# गुणायाजी में जीर्णोद्धार हेतु किया गया शिलान्यास

गुणायाजी 25 मई। श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ पावापुरी के समीपस्थ श्री गौतम स्वामी गुणायाजी तीर्थ जीर्णोद्धार समिति की ओर से आयोजित शिलान्यास का भव्य आयोजन समस्त गच्छों व समुदाय के समस्त आचार्य भगवंतों के आशीर्वाद और वासक्षेप व पू. गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा, पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा के मार्गदर्शन और निश्रादाता पू. आचार्य श्री महानंदसूरीश्वरजी म. सा एवं पू. मुनि श्री अभिषेकविजयजी म. आदि ठाणा के साथ ही पद्मश्री आचार्य चंदनाजी के सानिध्य में पूरी आस्था व उमंग के साथ परमात्मा महावीर की देशनाभूमि व प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी की केवलज्ञान भूमि पर शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ।

24 तारीख की शाम यादगार रही। श्रेष्ठिवर दीपकभाई बारडोलीवाले ने गुरु गौतम भगवान के चरणों पर अपनी प्रस्तुति अर्पित की। दीपक भाई ने अपने कार्यक्रम के माध्यम से सभी को भावयात्रा करवाई। ऐसा लगा मानो सभी गुणियाजी में गौतम प्रभु के देशना में उपस्थित है।

शिलान्यास के सभी लाभार्थी और सभी प्रतिभागियों ने अलग-अलग तरीके से शिला पूजन का अनुभव प्राप्त किया। ऐसा जैन समाज के इतिहास में पहली बार देखने को मिला। दूसरे दिन यानी 25 मई को ऐतिहासिक सुबह को शिलान्यास नरेंद्र वाणीगोता व विधिकारक राजूभाई मलकापुर की उपस्थिति में किया गया। महावीर स्वामी भगवान की मुख्यशिला संघवी श्री रमेशकुमारजी मुथा, राहुल मुथा ने बहुत ही हर्षोल्लास के साथ रखीं। गौतमस्वामी भगवान की मुख्य शिला श्री गिरधारीलालजी बाबूलालजी अशोककुमार, महावीरकुमार, लुंकड परिवार वालों ने अपने सम्पूर्ण परिवार जनों के साथ रखीं।

इसी कड़ी में अन्य शिलाओं के लाभ श्री रमेशजी जैन जीएम, राजेन्द्रजी सोनवाड़िया, सुनीलजी चौरड़िया, पन्नालालजी गुलाबबाई कवाड परिवार, जगदीशचंद्रजी छाजेड़, माणकचंदजी वरदीचंदजी ललवाणी परिवार, संघवी प्रतिक कुशलराज गुलेच्छा, मांगीलालजी मालु परिवार ने लाभ लिया।

परियोजना के लिए बनाए गए मॉडल का उद्घाटन जीरावला के अध्यक्ष श्री रमणभाई और जीतो एपेक्स के अध्यक्ष श्री गणपतजी चौधरी प्रकाशजी सिरोडी के साथ नाकोड़ा के अध्यक्ष और गुणायाजी तीर्थ निर्माण संयोजक श्री रमेशजी मुथा और गुणायाजी जीर्णोद्धार समिति संयोजक तेजराजजी गुलेच्छा और अध्यक्ष सुरेंद्रकुमारजी पारसान ने किया। दिनेशकुमारजी कोचर एवं प्रेक्षा कोचर ने गौतम स्वामी केवलज्ञान भूमि गुणायाजी पर बने प्रथम भक्ति गीत का लोकार्पण किया। साथ ही पूरे प्रोजेक्टर का थ्रीडी व्यू का भी विमोचन किया गया।

पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का मंगल संदेश पढ़कर सुनाया गया।

इस अवसर पर जीतुभाई पंडित और आर्किटेक्ट मयंक बड़जातिया और आर्किटेक्ट यतिन पांड्या के साथ एसोसिएट आर्किटेक्ट एसएएस साक्षी मेहता, निर्माण संयोजक महावीर मेहता के साथ ही राजगीर का ट्रस्ट मंडल पटना इंद्रचंदजी बोहरा, रमेशजी बोहरा, रमेशजी हरण, अशोकजी गजानन, रमेशजी जीएम, किरणजी दांतेवाडिया, जवाहरलालजी चौधरी, अशोकजी सालेचा, सुरेशजी, प्रकाशजी सिरोडी, यूथ मोटिवेटर राहुल कपूर और नंदप्रभा परिवार के रुजुबालिका से राकेशजी और कलकत्ता से ट्रस्टी सहित विशिष्ट जनों की उपस्थिति रहीं।

आयोजन को ऐतिहासिक व सफल बनाने में अध्यक्ष सुरेंद्रजी पारसान, समिति के संयोजक संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, निर्माण योजना संयोजक रमेशजी मुथा, निर्माण संयोजक महावीर मेहता, ट्रस्टी जे.सी.संचेती, शांतिलाल बोथरा, प्रदीप कुमार बोयडे, सुभाष बोथरा, तिलोकचंद पारिख आदि सहित विशिष्ठ जनों की अहम भूमिका रही। (शेष पृष्ठ 42 पर)

# औरंगाबाद शहर में कलश मंदिर एवं दादावाडी का शिलान्यास

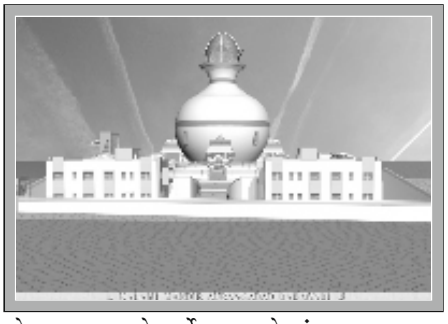

औरंगाबाद 21 अप्रेल। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं शुभाशिष से एवं आज्ञानुवर्तिनी पूज्या महात्तरा श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या पूज्या गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा., पूज्या स्नेहसुरभी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता पूज्या हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा-५ की निश्रा में औरंगाबाद शहर के प्रवेश द्वार दौलताबाद रोड, शरणापुर फाटा पर श्री केसरियानाथ जैन श्वेतांबर कलश मंदिर एवं दादावाड़ी का शिला स्थापना समारोह श्री सकल जैन संघ की उपस्थिति में दिनांक २१ अप्रेल २०२२ को हर्षोल्लास से संपन्न हुआ।

इस समारोह में पूज्या हर्षपूर्णाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ५ का मंगलमय प्रवेश हुआ। विधि-विधान श्री देवेंद्रभाई पटनी (मालेगांव) ने करवाया। प्रभुभक्ति, गुरुभक्ति का संगीतमय वातावरण निर्मित हुआ! मीठे-मीठे भजनों से भक्तों का मन मंत्रमुग्ध हो गया।

पूज्या साध्वी हर्षपूर्णाश्रीजी म. का मंगलमय प्रवचन हुआ। सामूहिक दादागुरुदेव इकतीसा का जाप किया गया। कई गुरु भक्तों ने संकल्प रूपी नियम ग्रहण किए। इस शुभ अवसर पर औरंगाबाद जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ के अध्यक्ष श्री अनिलजी कपूरचंदजी संचेती, एडवोकेट गजेंद्र देवीचंदजी भंसाली ने अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। प्रभुभक्ति, गुरुभक्ति की रमझट सकल जैन समाज औरंगाबाद के उपाध्यक्ष श्री संजयजी संचेती ने जमायी। स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

लाभार्थी परिवार की खूब-खूब अनुमोदना। भूमिदाता- स्व. बसंताबाई मदनलालजी बोरा, स्व. सायरबाई मंगलचंदजी बोरा की स्मृति में श्री राजेंद्रजी मंगलचंदजी बोरा, श्री पवनजी प्रफुल्लजी श्रीश्रीमाल एवं श्री सोनाजी वासुदेवजी कस्बेकर परिवार, मुख्य शिला- श्री महावीरचंदजी कमलकुमारजी कोठारी परिवार, पूर्व दिशा- श्री स्वरूपचंदजी हेमंतकुमारजी बरंठ परिवार, पश्चिम दिशा- श्री केसरीचंदजी नवरतनमलजी मेहता परिवार (मालेगांव), उत्तर दिशा- स्वर्गीय पुतलाबाई इंद्रभानजी बोरा परिवार, दक्षिण दिशा- श्री कांतिलालजी रमेशचंदजी सांखला परिवार, ईशान दिशा- श्री डॉ. इंद्रकुमारजी, डॉ. नितेशकुमारजी जिंदानी परिवार, आग्नेय दिशा- श्री अतुलकुमारजी (सी.ए), यशकुमारजी कोठारी परिवार, वायव्य दिशा- स्व. सुलोचनाबाई नथमलजी गेलडा परिवार, नैऋत्य दिशा- श्री तेजस शांतिलालजी शाह परिवार, आरती- श्री कांतिलालजी सुरेशचंदजी सांखला परिवार, मंगल दीपक- श्री डॉ. इंद्रकुमारजी, डॉ. नीतेशकुमारजी जिंदानी परिवार, गुरु पूजन- श्री राहुलकुमारजी, डॉ. सुमतिचंदजी भंसाली परिवार (मलकापूर), शांति कलश- सौ. मंगलाबेन महावीरचंदजी कोठारी परिवार रहे। प्रेषक: एड. गजेंद्र देवीचंदजी भंसाली (औरंगाबाद)

(शेष पृष्ठ 41 का)

## गुणायाजी में ....

**पवित्र धरोहर का अनूठा केन्द्र**- यह वह पवित्र स्थान है जहां पर जैन धर्म के परमात्मा महावीर की वाणी कण-कण में आज भी विद्यमान है। जिस स्थान पर परमात्मा के समवशरण लगे। परम आत्मज्ञानी, अनन्त लब्धिनिधान, भक्ति निधान एवं विनय निधान महात्मा गणधर गौतम स्वामी को इसी भूमि पर केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। उसी गुणायाजी तीर्थ का आमूलचूल जीर्णोद्धार होने जा रहा है। जहां परमात्मा महावीर के समवशरण की रचना होगी। गौतम स्वामी चौमुख रूप में विराजमान होंगे। साधना का अनूठा केंद्र स्थापित होगा। इस भूमि के जीर्णोद्धार के क्रम में समिति के सतत प्रयास से चार वर्षों में यहां भव्य मंदिर, म्यूझियम, गेस्ट हाउस, उपाश्रय एवं भक्तों के ठहरने के लिए बेहतरीन व्यवस्था तो होगी ही साथ ही वर्ल्ड सेंटर आफ नॉलेज आन जैनिज़्म, ध्यान केन्द्र भी बनाया जा रहा है।

# गणिवर्य श्री का जन्म दिवस मनाया

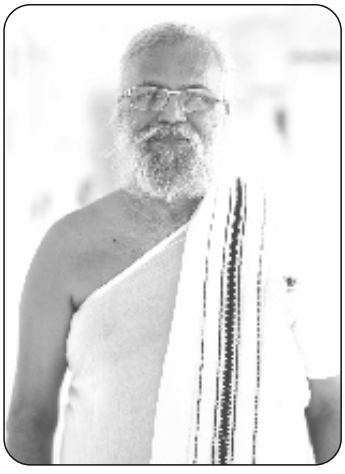

कंपली 24 मई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पू. स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. सा. एवं पू. गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4 एवं गच्छगणिनी पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका दक्षिण प्रभाविका आर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 की पावन निश्रा में कम्पली की धन्य धरा पर पूज्य गणि श्री मनीषप्रभसागरजी म. सा. का 54वां अवतरण दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा में पूज्य मुनि मंथनप्रभसागरजी ने कहा कि गंगा और गुरु तत्त्व मैं बहुत सारी समानता होने पर भी बहुत सारी भिन्नता है। गंगा के पास हमें जाना पड़ता है और गुरु तो स्वयं चलकर हमारे पास आते हैं। गणिवर्य जी से बधाई देते हुए आशीष मांगा। मुनि मतीशप्रभसागरजी म. सा. ने गणिवर्य जी के प्रति कृतज्ञता अर्पण की।

समस्त सुलोचना मंडल की तरफ से बधाई देते गच्छगणिनी पूज्या सुलोचनाश्रीजी म. ने कहा कि गणिवर्यजी बचपन से धर्म से जुड़े हुए थे। उनका त्यागमय जीवन और गुणयुक्त जीवन है। साध्वी प्रियकृपांजनाश्रीजी ने श्रद्धा का महत्व बताते हुए पूज्य गणिवर्य को जन्म दिवस की बधाइयाँ दी। नूतन साध्वी प्रियक्रियांजनाश्रीजी ने गीत के माध्यम से ये भावना भायी कि आप दीर्घायु बने।

गणिवर्यजी ने सबकी बधाइयां स्वीकार करते हुए कहा कि मेरा अस्तित्व सद्गुरु की कृपा से है। उन्होंने मुझे संयम जीवन प्रदान किया। गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब के चरणो में कृतज्ञता अर्पण की और कहा कि आत्म साधना में लीन बनूं।

कम्पली श्री संघ से उन्हें कामली ओढ़ाकर बधाई दी गयी। दोपहर में दादा गुरुदेव की पूजा रखी गई।

–पूजा मेहता

# मनोहर गौशाला में गौमूत्र से बनी टेबलेट

रायपुर 11 अप्रेल। छत्तीसगढ़ की राज्यपाल अनुसुईया उइके ने मनोहर गौशाला (जीरावला पार्श्वनाथ) धाम, खैरागढ़ के मैनेजिंग ट्रस्टी पदम डाकलिया ने मुलाकात की। इस अवसर पर डाकलिया ने राज्यपाल को जन्मदिन की बधाई दी। राज्यपाल उइके ने गौशाला में गोमूत्र से निर्मित टेबलेट की लॉन्च की।

उल्लेखनीय है कि गौशाला में उपस्थित गौ वंशों में ज्यादातर बूढ़ी, बीमार और नेत्र विहीन हैं, जिनकी सेवा गौशाला में की जा रही है।

गौशाला में ही गौमूत्र से गोअर्क बनाया जाता है, जिसे निशुल्क वितरित किया जाता है। 7 साल में 11500 बोतल गौ अर्क नि:शुल्क वितरित हो चुकी है, जिससे सैकड़ों लोग लाभान्वित हुए है। वर्तमान में निर्मित टेबलेट भी नि:शुल्क प्रदान की जाएगी।

## बाछडाऊ में श्री संघ के चुनाव

बाछडाउ 19 अप्रेल। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा बाडमेर से विहार कर ता. 19 अप्रेल को बाछडाउ पधारे। श्री संघ द्वारा उनका सामैया किया गया। पूज्य गुरुदेवश्री का प्रवचन हुआ।

तत्पश्चात् श्री संघ की बैठक हुई जिसमें निर्णय किया गया कि जिन मंदिर का कार्य जो अधूरा पडा है, उसे शीघ्रातिशीघ्र पूरा किया जाये।

इस हेतु श्री संघ के चुनाव करवाये गये। जिसमें श्री प्रकाशचंदजी मालू को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। श्री मोहनलालजी भंसाली को उपाध्यक्ष, श्री जगदीशजी संखलेचा को सचिव, श्री देवराजजी संखलेचा को सहसचिव, श्री बंशीधरजी मालू को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। श्री लालचंदजी बोथरा, लक्ष्मीनारायणजी धारीवाल, धनराजजी मालू व राकेशजी छाजेड को सदस्य नियुक्त किया गया।

## सादर श्रद्धांजलि

**卐 संघवी श्री जीतमलजी दांतेवाडिया, मांडवला**

जहाज मंदिर मांडवला के पूर्व अध्यक्ष संघवी श्री जीतमलजी कुन्दनमलजी दान्तेवाडिया (मांडवला निवासी) का स्वर्गवास दिनांक 08/05/2022 बैंगलोर में हो गया। परम गुरुभक्त एवं समाज सेवा में अग्रणी श्री दांतेवाडिया का जहाज मंदिर के प्रति समर्पित थे। आपने पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास-उपधान में मुख्य सहयोगी एवं अनेक लाभ समय-समय पर लिए है। आपके स्वर्ग गमन से श्री मांडवला श्रीसंघ एवं जहाज मंदिर के एक धोरी श्रावक की रिक्तता हुई है।

जहाज मंदिर परिवार श्री दांतेवाडिया जी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता है। एवं उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

**卐 श्रीमती प्रकाश कंवरजी, बेंगलूरु**

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के राष्ट्रीय सहसचिव श्री ललित डाकलिया के पूज्य माताजी श्रीमती प्रकाश कंवरजी (उम्र 72 वर्ष) धर्मपत्नी स्व. श्री रेखचन्दजी डाकलिया का स्वर्गवास हो गया। धर्म परायण ने अपने पुत्रों को समाज सेवा के साथ चतुर्विध श्री संघ की सेवा के संस्कार दिये है। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता है। एवं परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

**卐 श्री पोखराजजी पारेख, वडोदरा**

श्रद्धावंत पारेख परिवार के मोभी, सरल स्वभावी, मिलनसार श्रेष्ठीवर्य श्री पोखराजजी लाधुरामजी पारेख का 94 वर्ष की आयु में दिनांक 17 मई को स्वर्गवास हो गया।

सेवाभावी, कर्मनिष्ठ दिवंगत पोखराजजी ने अपने उत्कृष्ट जीवन काल में वडोदरा दादावाड़ी से धोलका दादावाड़ी का पैदल संघ, चारों दादावाड़ी का संघ यात्रा प्रवास, उपरान्त जीवदया, साधु साध्वी वैयावच, साधर्मिक भक्ति, अनुकम्पा दान, शिक्षादान, सुपात्र दान जैसे जिनशासन के अनेक सत्कार्य किये है।

पुण्यशाली आत्मा की विदाई से श्री खरतरगच्छ जैन संघ, समाज एवं अनेक सामाजिक धार्मिक संस्थाओं में अपूरणीय क्षति हुई है।

जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता है। एवं परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

(शेष पृष्ठ 15 का)

## अधूरा सपना

यह राह इन्होंने चुनी है। पर मैं क्या करूँ? इस जंगल में रुककर इनकी असुविधा बढाने से कोई फायदा नहीं। विश्राम के अभाव में इनकी थकान उतर नहीं सकती।

वंकचूल मन ही मन जंगल जल्दी समाप्त हो ऐसी प्रार्थना कर ही रहा था कि इतने में उसके साथी ने एक ओर अंगुली निर्देश करते हुए कहा- लगता है अब वन-प्रदेश का अंत निकट है।

दूसरे साथी ने कहा- हाँ! महाराज अगर कोई निकट में छोटा भी गाँव आता है तो हम चार-छः दिन वहाँ रुकेंगे। निरंतर चलने के कारण हम तो फिर भी आदी हैं पर युवरानी और राजकुमारी तो जैसे मुरझा ही गयी है। अगर इन्हें जल्दी विश्राम नहीं मिला तो इनका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

इतने में एक साथी ने अंगुली निर्देश करते हुए कहा- देखिये महाराज! पूर्व दिशा में कोई छोटी सी पल्ली दिखायी दे रही है। इधर उधर घास चरती गायें... भौंकते कुत्ते लोगों की उपस्थिति का प्रतीक है।

वंकचूल ने सारथी को उधर ही अपना कारवां ले जाने का संकेत कर दिया। कुछ ही दूर जाने पर ढोल, नगाडे एवं गीतों की आवाज सुनायी दी। पल्ली के बाहर सैंकडों की संख्या में लोग हर्षोल्लास करते हुए नजर आ रहे थे।

सुंदरी ने ढिंपुरी छोडने के बाद आज पहली बार खुशी से पुलकते लोगों को देखा था। उसने पूछा-क्या बात?

******

(शेष पृष्ठ 12 का)

## ऐसे थे मेरे गुरुदेव

चौहटन बाडमेर के बीच बसे राणीगांव में जिन मंदिर का निर्माण हुआ था। उसकी प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेवश्री के करकमलों से उस वर्ष वि. सं. 2019 ज्येष्ठ सुदि 13 सोमवार ता. 25 जून 1961 को नौ दिवसीय महोत्सव के साथ संपन्न हुई थी। मूलनायक के रूप में सुमतिनाथ परमात्मा को बिराजमान किया था।

इस प्रतिष्ठा की खुश्बू उस समय पूरे परगने में फैली थी। क्योंकि प्रतिष्ठा के दिन अनूठा चमत्कार हुआ था। जिस क्षेत्र में चातुर्मास काल में भी बरसात का पूरा योग नहीं बनता। उस क्षेत्र में प्रतिष्ठा की संपन्नता होते ही मूसलाधार बारिश हुई थी। पूरे क्षेत्र के जैन-जैनेतर सभी लोग इसे पूज्य गुरुदेवश्री का चमत्कार मानते हैं।


## नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

**श्री विक्रमपुर (राज.)**

द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

*Administrotor*
**Shri Dharmendra Khajanchi**
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 ( जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

**श्री खेतासर (राज.)**

चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर हैं।

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

**श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)**

खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

# साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. ठाणा 2 धोरीमन्ना दीक्षा समारोह में अपनी सानिध्यता प्रदान कर बामणोर होते हुए बाडमेर पधारे। जहाँ अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा समारोह पर अपनी सानिध्यता प्रदान की। तत्पश्चात् महावीर वाटिका में ता. 8 मई को प्रतिष्ठा समारोह व पदाभिषेक समारोह में सानिध्यता प्रदान करने के पश्चात् ब्रह्मसर पधारे। वहाँ कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् पाली जिले के डुठारिया की ओर विहार करेंगे। उनका चातुर्मास प्रवेश ता. 9 जुलाई 2022 शनिवार को संपन्न होगा।

0 पूज्य स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मतीशप्रभसागरजी म. ठाणा 4 सिंधनूर से विहार कर कम्पली पधारे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 25 मई 2022 को नूतन साध्वी श्री प्रियक्रियांजनाश्रीजी म. की बडी दीक्षा संपन्न हुई। वहाँ से बल्लारी होते हुए बैंगलोर की ओर विहार किया है।

0 पूज्य उपाध्याय श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म. ठाणा 6 बाडमेर से विहार कर सांचोर, डीसा होते हुए पाटण पधारे। वहाँ दो दिन की स्थिरता के पश्चात् अहमदाबाद, बडौदा होते हुए नंदुरबार की ओर विहार कर रहे हैं। जहाँ उनका चातुर्मास प्रवेश ता. 9 जुलाई शनिवार को संपन्न होगा।

0 पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने बाडमेर से जोधपुर की ओर विहार किया। पू. गणिवर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी म. वहाँ हस्तलिखित ज्ञान भंडार का कार्य कर रहे हैं। वहाँ से जयपुर की ओर विहार होगा।

0 पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. बालोतरा पधारे, जहाँ 6 दिवसीय स्थिरता में नित्य प्रवचन हुए। वहॉ से पाली होते हुए जयपुर की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा विहार कर बीकानेर पधारे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में श्री कृष्णकुमारजी सौ. अंजुदेवी लूणिया के वर्षीतप के पारणे का आयोजन ता. 3 मई को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में परिवार की ओर से अष्टाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्याश्री वहाँ से विहार कर अजमेर होते हुए मालपुरा पधार गये हैं। वहाँ से 2 जून को जयपुर की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा विहार कर पेद्दतुम्बलम् पार्श्वमणि तीर्थ पधारे, जहाँ वर्षीतप के तपस्वियों के पारणे ता. 3 मई 2022 को संपन्न हुए। वहाँ से विहार कर पूज्याश्री सिन्धनूर पधारे। जहाँ कुमारी पूजा नाहर की भागवती दीक्षा के पश्चात् कम्पली पधारे। बडी दीक्षा के पश्चात् चेन्नई की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा विहार करते हुए सूरत पधारे। वहाँ से

विहार कर बारडोली होते हुए नंदुरबार पधारे। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् तलोदा पधारे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में वार्षिक ध्वजा का आयोजन किया गया। वहाँ से धूलिया होते हुए मालेगांव पधारे। वहाँ से 1 जून को मुंबई चातुर्मास हेतु विहार किया है।

0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 बाडमेर कुशल वाटिका में बिराज रहे हैं। चातुर्मास वहीं होगा। स्वास्थ्य सकुशल है।

0 पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा बाडमेर से विहार कर फलोदी पधारे। जहाँ नेमिनाथ प्रभु के जीर्णोद्धारित जिन मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 1 जून 2022 को संपन्न हुई। वहाँ से 2 जून को बालोतरा की ओर विहार किया है। बालोतरा व सिणली में होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा शाहीबाग अहमदाबाद बिराज रहे हैं। वहाँ से खेतिया की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा अहमदाबाद से विहार कर पाली पधारे हैं। वहाँ से बालोतरा की ओर विहार करेंगे। प्रतिष्ठा के पश्चात् चौहटन की ओर चातुर्मास हेतु विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री अमितयशाश्रीजी म. आदि ठाणा नवरंगपुरा दादा साहेब ना पगलां अहमदाबाद बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 फलोदी प्रतिष्ठा में पधारे। वहाँ से 3 जून को विहार कर लोहावट होते हुए ओसियांजी पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 विहार करते हुए औरंगाबाद पधारे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से कलशाकार में निर्मित हो रहे श्री आदिनाथ जिन मंदिर एवं दादावाडी का शिलान्यास समारोह ता. 21 अप्रेल 2022 को अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। वहाँ से धूलिया, नंदुरबार पधारे। गुरुवर्या का सानिध्य मिला। वहाँ से बलसाणा तीर्थ पधारे। वहाँ से दोंडाइचा, सारंगखेडा, शहादा होते हुए खेतिया पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में मंदिर जी की वर्षगांठ मनाई जायेगी।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में सांचोर नगर में नवपदजी की ओली की आराधना हुई। तत्पश्चात् वहाँ से विहार कर सेवाडा, रामजी की गोल होते हुए धोरीमन्ना पधारे। दीक्षा समारोह की संपन्नता के पश्चात् चौहटन की ओर विहार किया। ता. 30 अप्रेल को उनकी वर्धमान तप की 78वीं ओलीजी का पारणा पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में संपन्न हुआ। वहाँ से विहार कर बाडमेर पधारे। वहाँ से विहार कर जोधपुर पधारे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 जोधपुर, नागोर होते हुए बीकानेर पधारे हैं। वहाँ से झुंझुनू की ओर चातुर्मास हेतु विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा सूरत बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा सूरत बिराज रहे हैं।

## प्रतिध्वनि

- चेहरे किसी क्रीम पाउडर से नहीं बल्कि अपनी काबिलियत से चमकते हैं।
- बड़ा आदमी बनना एक अच्छी बात है। पर एक अच्छा आदमी बनना बहुत बड़ी बात है।
- विजय उसी की होती है, बड़ा जिसका दिल होता है ईश्वर परीक्षा उसी की लेता है, जो उसके काबिल होता है।

(शेष पृष्ठ 13 का)

## विहार डायरी

उपधान तप में पहले उपधान तप के तपस्वी 55 के करीब थे। कार्यसमिति की बैठक में चर्चा प्रारंभ हुई कि माला विधान की बोलियाँ हो या नकरे!

प्राय: सभी की मानसिकता थी कि नकरे हों तो उचित होगा। हाँलाकि देवद्रव्य की वृद्धि के लक्ष्य से हमारी भावना बोलियों की अवश्य थी पर सबकी मानसिकता के आधार पर नकरों का निर्णय किया गया।

भायखला ट्रस्ट के साथ बैठकर यह निश्चित कर लिया गया था कि इस परिसर में जो भी चढावा बोला जायेगा, वह भायखला ट्रस्ट में जमा होगा। उसकी आधी राशि बाद में संघ को प्रेषित की जायेगी।

ट्रस्ट मंडल की धारणा थी कि उपधान तप की माला की बोलियाँ होगी। विशाल राशि एकत्र होगी। नकरों का निर्णय उन्हें उचित नहीं लगा। उन्होंने कहा भी था कि बोलियाँ ही होनी चाहिये। पर समिति के निर्णय को अब परिवर्तित नहीं किया जा सकता था।

नकरों के निर्णय की सूचना के बाद ट्रस्ट मंडल का व्यवहार थोडा औपचारिक हो गया था। या यों कहें कि व्यवहार बदल गया था। अब सहयोग के भाव दर्शित नहीं हो रहे थे।

यहाँ के चेयरमेन भीनमाल निवासी श्री बाफनाजी थे। उन्होंने वार्तालाप में बताया था कि भीनमाल में खरतरगच्छ का उपाश्रय यही परिवार सम्हालता था। उन्होंने स्वीकार किया था कि हम पूर्व में खरतरगच्छ की परम्परा के थे। पर बाद में विचरण के अभाव में परम्परा बदल गई।

इस बीच दादा गुरुदेव के महापूजन का पहला-पहला आयोजन यहाँ हुआ। दादा गुरुदेव की पूजा का प्रचलन तो पूरे भारत में है।

यतिप्रवर श्री रामलालजी म. ने किसी शुभ मुहूर्त्त में इस पूजा की रचना की होगी। जो शास्त्रीय त्रुटियों से पूर्ण होने पर भी यह पूजा पूरे भारत में प्रसिद्धि को प्राप्त हुई। पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.सा. ने चारों दादा गुरुदेवों की चार अलग-अलग पूजाओं की रचना की थी। पर वे इतनी प्रसिद्ध नहीं हो पाई। इसका कारण यह रहा कि रामलालजी म. की पूजा में चारों दादा गुरुदेवों की पूजा आ जाती है। थोडी सरल भाषा में भी है। हमारे मन में उस समय यह चिंतन रहा कि गाने वाली पूजाओं के साथ-साथ वर्तमान में मंत्रयुक्त महापूजनों का आयोजन इस कालखण्ड में लगातार बढ़ रहा है। श्री सिद्धचक्र महापूजन, पार्श्व पद्मावती महापूजन, भक्तामर महापूजन आदि कई प्राचीन, अर्वाचीन महापूजन वर्तमान में प्रचलित है तो क्यों नहीं एक महापूजन दादा गुरुदेव का निर्मित किया जाये।

इस विषय में हमने चिंतन किया। बहिन म. विद्युत्प्रभा की प्रेरणा थी कि महापूजन का गुंफन किया जाये। पालीताना के चातुर्मास में इसका संयोजन किया। लेकिन पहली-पहली बार यहाँ भायखला में इसे विधि विधान के साथ पढाया गया।

(क्रमश:)

## सेतरावा में जीर्णोद्धार

जोधपुर जिले के प्राचीन नगर सेतरावा में प्राचीन श्री आदिनाथ जिनमंदिर का जीर्णोद्धार पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपती आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा व उनकी निश्रा में प्रारंभ हुआ। ता. 23.5.2022 को पूज्य आचार्य, श्री पू. मयूखप्रभसागरजी म. एवं पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. का नगर प्रवेश करवाया गया।

पूज्य श्री की निश्रा में प्रतिमाओं का उत्थापन कर चल प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

इस अवसर पर स्थानीय विधायक श्री कृष्णाराजजी विश्नोई, सरपंच भोपालसिंहजी, फलोदी, बालेसर, आगोलाई, जेठियाना, सोमेसर, लोहावट आदि क्षेत्रों के श्रद्धालु व श्री संघ बडी संख्या में उपस्थित थे। सेतरावा संघ में जबरदस्त उत्साह व आनंद का माहौल था। प्रवचन फरमाते हुए पूज्य आचार्य श्री ने फरमाया नूतनमंदिर निर्माण से आठ गुना लाभ जीर्णोद्धार में है हमें मंदिर जीर्णोद्धार के साथ-साथ अपने जीवन का भी जीर्णोद्धार करना है।

पू. साध्वी प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म. ने आत्म कल्याण की प्रेरणा दी।

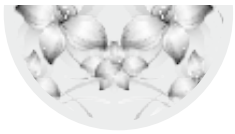

# जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संस्था संरक्षक

श्री मुल्तान जैन श्वे. सभा (श्री मुल्तान मन्दिर), आदर्श नगर, जयपुर
श्री अवन्ति पार्श्व. तीर्थ जैन श्वे.मू.पू. मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन
श्री जैन मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी
श्री जैन श्वे. संघ २(महावीर साधना केन्द्र) जवाहर नगर, जयपुर
श्री जैन श्वे. संस्था (वासुपूज्य आराधना भवन), मालवीय नगर, जयपुर
श्री दिल्ली गुजराती श्वे.मू.पू. जैन संघ गुजरात विहार, दिल्ली
श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, नईदिल्ली
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ, पचपदरा
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ सम्पत्ति ट्रस्ट, भीलवाड़ा
श्री देराऊर पार्श्वनाथ तीर्थ एवं देराऊर दादावाड़ी, जयपुर
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, हस्तिनापुर
श्री जैन श्वे. वासुपूज्यजी म. का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री जैन श्वे. चौमुख दादावाड़ी वैशाली नगर, अजमेर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जाटावास, लोहावट
श्री बडौदा जैन श्वे. खरतरगच्छ, संघ, वडोदरा
श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री अजितनाथ जैन नवयुवक मंडल, नंदुरबार
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, सांचोर
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, अजमेर
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, गाजियाबाद
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, गुरला (भीलवाड़ा)
जैन श्री संघ, सेलम्बा, (नर्मदा, गुजरात)
श्री पार्श्वमणि तीर्थ, पेद्दतुम्बलम्, आदोनी
श्री जैन श्वे. संघ जैन मंदिर, तलोदा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, केकड़ी
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, ब्यावर
श्री जैन श्री संघ, धोरीमन्ना
श्री उम्मेदपुरा जैन श्री संघ, सिवाना
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खापर
जैन श्री संघ, वाण्याविहिर
श्री कुशल पत संस्था, खापर
श्री नमिनाथ पत संस्था, खापर
श्री हाला जैन संघ, ब्यावर-फालना
श्री जिन हरि विहार समिति, पालीताणा
श्री हरखचंद नाहटा स्मृति न्यास, नई दिल्ली
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादावाडी, दोंडाईचा
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर जैन श्वे. ट्रस्ट, जैसलमेर
श्री जिन कुशल मंडल (बाड़मेर) इचलकरंजी
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुम्बई
श्री रायॅल काम्पलेक्स श्वे. मूर्तिपूजक संघ, मुंबई
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, भांयदर, मुंबई
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, दोड्डबल्लापुर (बैंगलोर)
श्री संभवनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, वडपलनी, चैन्नई
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट, अरूम्बकम, चैन्नई
श्री कुन्थुनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ (रजि.) सिंधनूर
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट-जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, चेन्नई
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी बाड़मेर ट्रस्ट- मालेगॉव
श्री जैन श्वे. आदीश्वर भगवान मंदिर ट्रस्ट, सोलापुर
श्री जैन श्वे. मू.पू. श्री संघ, बिजयनगर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जसोल
श्री शीतलनाथ भगवान मन्दिर एवं दादा जिनकुशलसूरि समिति, पादरू
श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, हुबली
श्री शान्तिनाथ जिनालय ट्रस्ट, चौहटन
- श्री जिन कुशल सूरि बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत
- दादावाड़ी श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि ट्रस्ट, अयनावरम् चैन्नई

## दादावाडी कोटूर का 18वां ध्वजारोहण भव्य रात्रि जागरण के साथ संपन्न

कोटुर 4 जून। पूरे भारत मे कई जगह मंदिरजी एवं दादावाडी के ध्वजारोहण होते है लेकिन कर्नाटक के कोटूर दादावाडी जो पूज्य खरतरगच्छधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. सा. की निश्रा में कर्नाटक की प्रथम प्रतिष्ठा थी वहां के ध्वजारोहण की विशेषता है कि यहां हर साल महोत्सव के रूप मे मनाते है।

इसी कडी में इस साल भी जेठ सुदि 4 ता. 3-06-22 को 18 अभिषेक महापूजन, रात्रि 9 बजे से सुबह 5 बजे तक रात्रि जागरण, गुरु भक्ति गुरु इकतीसा पाठ, जेठ सुदि 5 ता. 04-06-22 को सुबह भव्य वरघोडा, दादागुरुदेव पूजा एवं विजय मुहूर्त में दादागुरुदेव का ध्वजारोहण, शाम 7 बजे गुरुभक्ति एवं सामूहिक आरती के साथ महोत्सव मनाया गया। इस साल भी भक्ति के लिए विनय एण्ड पार्टी बेंगलूरु एवं सुप्रसिद्ध संगीतकार अंकित लोढ़ा रायपुर से पधारे। इस साल महोत्सव मे केयुप केएमपी अहमदाबाद, केयुप हुबली एवं हगरिबोम्मनहल्ली बेंगलूर से गुरुभक्त पधारे। महोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्था सहयोग केयुप एवं केएमपी कोटूर शाखा ने किया।

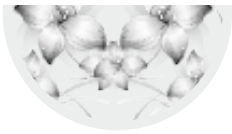

# जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक

श्री लालचन्दजी कानमलजी गुलेच्छा, अक्कलकुआं
श्री राजेन्द्रकुमार राणुलालजी डागा, अक्कलकुआं
श्री भंवरलालजी हस्तीमलजी कोचर, अक्कलकुआं
श्री ज्ञानचन्दजी रामलालजी लूणिया, अजमेर
श्री पूनमचन्दजी नैनमलजी मरड़िया, डंडाली- अहमदाबाद
श्री माणकमलजी मांगीलाल नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन-अहमदाबाद
श्री विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्यामप्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
श्री जगदीशचन्द, नितेश कुमारजी छाजेड़ (हरसाणी-बाड़मेर) हाल इचलकरंजी
श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर- इचलकरंजी
श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर- इचलकरंजी
श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़-इचलकरंजी
श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित-इचलकरंजी
श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना-इचलकरंजी
शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इचलकरंजी
श्री प्रवीणकुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इचलकरंजी
श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी रमेश अशोक लूंकड़ मोकलसर-इचलकरंजी
श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़, इंचलकरंजी
शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अरूणकुमारजी बापूलालजी डोसी, इन्दौर
श्री टीकमचन्दजी हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
डॉ. यू.सी. जैन अजयजी संजयजी लषितजी पार्थ जैन, उदयपुर
श्री फतेहलालजी सुल्तानजी लक्ष्मणजी आजादजी संजयजी सिंघवी, उदयपुर
श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल, सुराणा, उदयपुर
श्री सुधीरजी चावत, उदयपुर
श्री किरणमलजी सावनसुखा, उदयपुर
श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
श्री दौलतसिंहजी प्रतापसिंहजी गॉधी, उदयपुर
श्री शंकरलालजी बाफना, उदयपुर
श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा, उदयपुर
श्री नगराजजी पवनराजजी अशोककुमारजी मेहता, उदयपुर
श्री बलवन्तसिंहजी करणसिंह सुरेन्द्रसिंह पारख, उदयपुर
श्री मीठालालजी मनोजकुमार गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर
श्री दिलीपजी छाजेड़, खांचरोद-उज्जैन
श्री कुरीचन्दजी चन्दनमलजी मलासिया, ऋषभदेव
शा. कांतिलालजी पारसमलजी कागरेचा, ओटवाला
श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना-कारोला-मुंबई
घोड़ा श्री सुमेरमलजी मोतीलालजी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल, केशवणा
श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा- डोम्बीवल्ली
श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया, कोटा
श्री पन्नालालजी महेन्द्रसिंहजी गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता-दिल्ली
श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
श्री पारसमलजी मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया
श्री किशनलालजी हसमुख कुमार मिलापजी भंसाली, खेतिया

श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया-नासिक
श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन, गाजियाबाद
शा. मुलतानमलजी भवंरलालजी नाहटा, गांधीनगर
मिस्त्री मोहनलाल आर. लोहार, पो. चांदराई जि.जालोर
शा. जांवतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, धोरीमन्ना-चैन्नई
श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा, टिंडीवनम-चैन्नई
शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना-चैन्नई
श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद-चैन्नई
श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चैन्नई
श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर-चैन्नई
शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
श्री पदमचंदजी दिनेशकुमारजी कोठारी, चैन्नई
मै. एम. के. कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
श्री वीरेन्द्रमलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी-चैन्नई
श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़सिवाना-चैन्नई
श्रीमती इचरजबाई मिलापचंदजी डोसी, चैन्नई
एम. नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, चैन्नई
श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
श्री आर. मफतलाल, सौभागबेन चन्दन, चैन्नई
श्री बाबूलालजी हरखचन्दजी छाजेड़ (सी.टी.सी.), चेन्नई
शा. जेठमलजी आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
मै. राखी वाला, चैन्नई
श्री द्वारकादासजी पीयुष अनिल भरत महावीर डोशी, चौहटन
श्री महताबचन्दजी विशालकुमारजी बांठिया, जयपुर-मुंबई
श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
श्री जुगराजजी(सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर- भायंदर
श्री विमलचंदजी सौ. मेमबाईसा सुराणा, जयपुर
श्री किशनचन्दजी बोहरा सौ. सुधादेवी, जयपुर
श्री कनकजी श्रीमाल, जयपुर
श्री महावीरजी मुन्नीलालजी डागा, जयपुर
श्रीमती जतनबाई ध.प. स्व. मेहताबचंदजी गोलेछा, जयपुर
श्रीमती सरोज फतेहसिंहजी सिद्धार्थजी बरड़िया, जयपुर
श्री रूपचन्दजी नरेन्द्र देवेन्द्र नमनजी भंसाली, हालावाले-जयपुर
श्री दुलीचन्दजी, धर्मेशकुमारजी टांक, जयपुर
श्री महरचन्दजी मनोजकुमारजी धोंधिया, जयपुर
श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
श्री जितेन्द्रजी नवीन अजय नितीन महमवाल-श्रीमाल, जयपुर
श्री राजेन्द्रकुमारजी संजयजी संदीपजी छाजेड़, जयपुर
श्री इन्द्रचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
श्री विमलचन्दजी महावीरचन्दजी पंसारी, जयपुर
श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी गोलेछा, जयपुर
श्री शांतिचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी पुंगलिया, जयपुर
श्री हुकमीचन्दजी विजेन्द्रजी पूर्णेन्द्रजी कांकरिया, जयपुर
श्री ताराचन्दजी विजयजी अशोकजी राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर
श्री भीमसिंहजी तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
श्री सौभागमलजी ऋषभकुमारजी चौधरी, जयपुर
श्री संतोषचन्दजी विजयजी अजयजी झाड़चूर, जयपुर
श्री रतनलालजी अतुल अमित श्रीश्रीमाल हालावाले जयपुर
श्री माणकचन्दजी राजेन्द्रजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री उमरावचन्दजी प्रसन्नचन्दजी किशनचन्दजी डागा, जयपुर
श्री अभयकुमारजी अशोककुमार अनूपकुमार पारख-जयपुर
श्री त्रिलोकचन्दजी प्रेमचन्दजी सिंघी, जयपुर
श्री घनश्यामदास दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
श्री सुरेन्द्रमलजी गजेन्द्रजी धर्मेन्द्रजी पटवा, जालौर
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी गुलेच्छा, जीवाणा- चैन्नई
श्री भंवरलालजी, बाबूलालजी पारख, जीवाणा
संघवी कानमलजी बाबूलालजी नेमीचंदजी अशोकजी गोलेछा, जीवाणा-चेन्नई
श्री खीमचन्दजी अशोककुमारजी कंकूचौपड़ा, जीवाणा- बैंगलोर
श्रीमती प्रेमलताजी श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर
श्री गोविन्दचन्दजी राजेशजी राकेशजी मेहता जोधपुर-मुम्बई
श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
श्री लूणकरणजी घीसुलालजी सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन नाहटा नई दिल्ली
श्री बी.एम. जैन लक्ष्मीनगर, दिल्ली
श्री घनश्यामदासजी नवीनजी सुशीलजी सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
श्री शीतलदासजी विरेन्द्रकुमारजी राक्यान, नई दिल्ली
श्री ज्ञानचन्दजी महेन्द्रकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री पवित्रकुमारजी सुनीलजी, गुनीतजी बाफना, कोटा-नई दिल्ली
श्री अरुणकुमारजी हर्षाजी हर्षावत, नई दिल्ली
श्री राजकुमारजी ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
श्री मोतीचन्दजी श्रीमती आभादेवी पालावत, नई दिल्ली
श्री विरेन्द्रजी राजेन्द्रजी अभिषेकजी आदित्यजी पीयूषजी मेहता, दिल्ली

श्री रिखबचंदजी राहुलकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री अशोककुमारजी श्रीमती चंदादेवी जैन, नई दिल्ली
श्रीमती नीलमजी सिंघवी, नई दिल्ली
श्रीमती विजयादेवी धीरज बहादुरसिंहजी दुग्गड़, नई दिल्ली
श्री शांतिप्रकाशजी अशोककुमार प्रवीण सिंधड़, अनूपशहर, नई दिल्ली
श्रीमती भारतीबेन शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
श्री सुमेरमलजी मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर-दिल्ली
श्री चन्द्रसिंहजी विपुलकुमारजी सुराणा, दिल्ली
श्री प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली
शा. महेशकुमारजीर विरधीचंदजी गांधी, धोरीमन्ना
श्रीमती भंवरीदेवी गोरधनमलजी प्रतापजी सेठिया, धोरीमन्ना
संघवी मुथा चन्दनमलजी महेन्द्र नरेन्द्र तातेड़, पादरू-नंदुरबार
श्री भँवरलालजी ललित राजु कैलाश गौतम संखलेचा, पादरू- चैन्नई
श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना हीराणी, पादरू
संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू-मुम्बई-चैन्नई
श्री भंवरलालजी नेमीचन्दजी कटारिया, पादरू
श्री रूपचन्द जवेरीलालजी गोलेछा ढालूवाले, पादरू
मेहता शा. पुखराज सुमेरमलजी तातेड़, पादरु-सेलम
श्री बाबूलालजी शर्मा, राकांवत डेकोरेटर्स, तखतगढ़-पाली
शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति,गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
श्री रतनचन्दजी सौ. निर्मलादेवी बच्छावत, फलोदी
श्री रमेशचन्दजी सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी
श्री मनोहरमलजी दलपतकुमार महेश हरीश नाहटा, हालावाले फालना
श्री खूबचन्दजी चन्दनमलजी बोहरा, हालावाले फालना
श्री मोतीचन्दजी फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा
श्री आसुलालजी मांगीलालजी बाबूलालजी डोशी, चौहटन-बाड़मेर
श्री चिन्तामणदासजी, तगामलजी बोथरा, बाड़मेर
श्री रिखबचंदजी प्रकाशचन्दजी सेठिया, चौहटन-बाड़मेर
श्री रतनलालजी विनोदकुमार गौतमकुमार बोहरा, हालावाले, बाड़मेर
श्री आसूलालजी ओमप्रकाशजी संकलेचा, बाड़मेर
श्री रामलाल, महेन्द्र, भरत, धवल मालू, डाकोर-बाडमेर
श्री जगदीशचन्द देवीचन्दजी भंसाली, बाड़मेर-पाली
श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
श्री बाबूलाल भगवानदासजी बोथरा, बाड़मेर
शा. मनसुखदास नेमीचंदजी पारख, हरसाणीवाला, बाड़मेर
शा. सुरेशकुमार पवनकुमार मुकेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल बोहरा, बाड़मेर
श्री मुन्नीलालजी जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
शा. अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया सिंघवी बालोतरा- मुंबई
श्री उत्तमराजजी पारसकंवर सिंघवी, बिजयनगर
श्री सम्पतराजजी सपनकुमारजी गादिया, पाली बैंगलौर
श्री पुखराजजी हस्तीमलजी पालरेचा, मोकलसर-बैंगलोर
शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव-बैंगलोर
श्री आनन्दकुमारजी कांतिलाल प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हालावाले बैंगलोर
श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर- बैंगलोर
श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर बैंगलोर
शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर-बैंगलोर
शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना-बैंगलोर
श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजाणी रांका, बैंगलोर
श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
संघवी शा. मांगीलालजी भरतमलजी, बैंगलोर
श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
श्री माणकचंदजी, गौतमचंदजी चौपड़ा, ब्यावर
श्री संजयकुमारजी, कनिष्ठकुमारजी बरडिया, ब्यावर
श्री ओमप्रकाशजी राजेशजी (ओमजी दवाईवाला), ब्यावर
श्री उगमराजजी सुरेशकुमारजी मेहता, ब्यावर
सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी यशवंतजी रांका, ब्यावर
श्री मदनलालजी दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री कुशलचंदजी पारसकुमारजी सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर
श्री शांतिलालजी सज्जनराजजी कुशलराजजी ऋषभ तातेड़-गडवानी, ब्यावर
श्री कानसिंहजी मधुसूदन सुदर्शन संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा
श्री जीवनसिंहजी दीपककुमार राजेशकुमारजी लोढ़ा, गुरलां-भीलवाड़ा

श्री प्रेमसिंहजी राजेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी बोहरा गुरलां-भीलवाड़ा
श्री भंवरलालजी बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां-भीलवाड़ा
शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी-मल्हारपेठ
संघवी श्री हंसराजजी रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा मांडवला
शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
मूथा शा. नेनमलजी पन्नालालजी सोनवाड़िया, मांडवला
श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड़, मांडवला-मुम्बई
श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी चेतनजी जैन पाली-मुम्बई
श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू-मुम्बई
श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर-मुम्बई
श्री महेन्द्रकुमारजी शेषमलजी दयालपुरा वाले, मुम्बई
श्री कन्हैयालालजी भगवानदासजी डोसी-मुम्बई
श्री रिखबचन्दजी जैन, मुम्बई
शा. अनिल रणजीतसिंहजी पारख, जोधपुर-मुंबई
श्रीमती टीपूदेवी कालुचंदजी, बदामीदेवी अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर-मुंबई
शा. भंवरलालजी कमलचन्द रिषभ गुलेच्छा, मुम्बई
श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा-मुंबई
श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
श्री गौतमचंद डी. भंसाली, मुंबई
शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, सांचौर-मुंबई
श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, डुठारिया-मुंबई
श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल, फालना-मुंबई
श्री भंवरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़, हरसाणी-मुंबई
श्री वंसराजजी मिश्रीमलजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री मीठालालजी अमीचंदजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री किस्तुरचन्दजी छगनलालजी चौपड़ा, रतलाम
श्री मदनलालजी रायचन्दजी शंखलेशा, रामा-कल्याण
श्री अनूपचन्दजी अनिल अशोक अजय कोठारी, रायपुर
श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी बेदमुथा, रायपुर
श्री उमेशकुमारजी मुकेशकुमारजी तातेड़, रायपुर
स्व. हस्तीमलजी छोगाजी हिरोणी, रेवतडा-चेन्नई
श्री नथमलजी भंवरलालजी सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
श्रीमती शांताबेन हरकचन्दजी बोथरा, सांचौर
श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचौर-मुम्बई
श्री धुडचंदजी रतीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुम्बई
श्री रावतमल सुखरामदास कमलेश विमल धारीवाल चौहटन-सांचौर
श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचौर
स्व. दाड़मीदेवी श्री पुखराजजी बोथरा, सांचौर
श्री हरकचन्दजी सेवन्तीजी जितेन्द्र विनोद राजेश शाह, सांचौर
शा. प्रकाशंचद पारसमलजी छाजेड़, सांचौर
श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर-हैदराबाद
श्री दिलीपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर- मुंबई
श्री जुगराजजी रमेशजी उत्तमजी महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना- मदुराई
श्रीमती सुखीदेवी श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़, सिवाना-पूना
श्री पारसमलजी चंपालालजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री प्रकाशकुमार अंकितकुमारजी जीरावला, सूरत
श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा-हैदराबाद
श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री बाबूलालजी मालू-सूरत
श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़-बाड़मेर-सूरत
शा. पारसमलजी शेरमलजी गोठी, डांगरीवाला-सूरत
श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
श्री भीकमचन्दजी बाबूलालजी तोगमलजी गोलेछा, पादरू-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपड़ा, बिलाडा-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
श्री गौतमचन्दजी मीनादेवी सौरभ, सुलभ कोठारी,रायपुर (छ.ग.)
श्रीमती सुरजदेवी गुलाबचन्दजी मुणोत, रायपुर (छ.ग.)
श्री भूरमलजी नवलखा राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री संजयजी सिंघी, राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री हस्तीमलजी अभिषेक कुमार धारीवाल, बाड़मेर
श्री महावीरचंदजी अशोककुमारजी हरकचंदजी चोपड़ा, अहमदाबाद
-श्री जसराज राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
-श्री मेघराजजी तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
-श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी सुराणा, इन्दौर
-श्री गेंदमल पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
-श्री रतनचन्द जयकुमार जिनेन्द्रकुमार चौपड़ा, उज्जैन
-श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचौर-बडोदरा
-श्री धवलचन्दजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
-श्री पारसमलजी हंजारीमलजी बोहरा, सांचौर
-श्री चुन्नीलालजी मफतलालजी मरड़िया, सांचौर-सूरत
-श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा-सूरत
-श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत
-शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद-सेलम
-श्री कन्हैयालालजी मुकेशकुमारजी, सोमपुरा, लुणावा

# जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर हमेशा सपना देखता था। एक ही सपना बदलते स्वरूप के साथ उसे हमेशा आता था। लगातार ऐसे सपनों के कारण वह अत्यन्त परेशान हो उठा था। वह इलाज कराने मनोचिकित्सक के पास गया।

मनोचिकित्सक ने उससे वार्तालाप किया। पूछा- तुम्हें क्या सपना आता है?

वह बोला- मैं सपने में अपने आपको रेस के घोडे के रूप में पाता हूँ। रोज दौड़ता हूँ। मुझे चिन्ता होने लगी है कि मेरा भविष्य क्या होगा?

डॉक्टर ने कुछ सवाल किये। फिर कहा- चिन्ता मत करो। आज सोने से पहले यह एक गोली ले लेना। तुम्हें सपने आने बिल्कुल बंद हो जायेंगे।

जटाशंकर प्रसन्न हुआ। सोचा- चलो हमेशा-हमेशा के लिये इस बीमारी से छुटकारा मिलेगा। पर चार मिनट के बाद कहा- डॉक्टर साहब! मैं यह टेब्लेट आज नहीं, कल लेना चाहता हूँ।

मनोचिकित्सक ने अचरज से भरकर पूछा- क्यों! आज क्यों नहीं!

जटाशंकर धीरे से बोला- असल में इतने दिनों से मैं सपने में घोडा बनकर रेस में हिस्सा ले रहा हूँ। आज रात फाइनल है। मैं कल सपने में फाइनल में पहुँच गया था। आज फाइनल दौडना चाहता हूँ। फिर कल दवाई ले लँगा।

जटाशंकर की बात सुनकर डॉक्टर हक्का बक्का रह गया।

**हमारा मन भी जटाशंकर की भांति है। सपनों को हम सच मान लेते हैं। जबकि सपना कभी यथार्थ नहीं हो सकता। संसार भी एक सपना है। इस सपने से बाहर निकलकर अपने यथार्थ आत्म-स्वरूप का बोध प्राप्त करना है।**

## पूज्य गच्छाधिपतिश्री का विहार कार्यक्रम

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा धोरीमन्ना से विहार कर बामणोर होते हुए चौहटन पधारे। वहाँ एक दिन की स्थिरता के पश्चात् विहार कर राणीगांव होते हुए बाडमेर पधारे। ता. 3 मई 2022 को वर्षीतप पारणा समारोह के पश्चात् महावीर वाटिका पधारे। वहाँ ता. 8 मई को श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव एवं उपाध्याय व गणि पद प्रदान महोत्सव संपन्न हुआ। वहाँ से ता. 9 मई को विहार कर श्री नाकोडाजी तीर्थ होते हुए आगोलाई पधारे। वहाँ से सेतरावा पधारे जहाँ उनकी निश्रा में प्राचीन आदिनाथ जिनमंदिर का जीर्णोद्धार के लक्ष्य से परमात्मा का उत्थापन होकर चल प्रतिष्ठा संपन्न हुई। वहाँ से विहार कर ता. 26 मई को पूज्यश्री फलोदी पधारे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 1 जून 2022 को जीर्णोद्धार कृत श्री नेमिनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। वहाँ से ता. 2 जून को विहार कर ता. 10 जून को बालोतरा पधारेंगे। वहाँ ता. 13 जून को प्रतिष्ठा व ता. 15 जून को सिणली में प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर जयपुर की ओर विहार होगा। जहाँ चातुर्मास प्रवेश ता. 10 जुलाई 2022 को संपन्न होगा।

संपर्क- मुकेश 9825105823 / 7987151421

॥ श्री महावीराय नमः॥
॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥
॥ श्री जिनदत्त–मणिधारी–कुशल–चन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः॥

# श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाडी संघ, इचलकरंजी में

## भव्यातिभव्य चातुर्मास मंगल प्रवेश पर भावभरा आमंत्रण

**आज्ञा प्रदाता**
अंवती तीर्थोद्धारक
प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**प्रत्यक्ष आशीर्वाद**
पू. प्रवर्तिनी सज्जनश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा.

**पावन निश्रा**

पू. प्रवर्तिनी सज्जनश्रीजी म.सा.
पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें

**प. पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा.**

आदि ठाणा 3

## चातुर्मास मंगल प्रवेश
## दिनांक 3 जुलाई 2022, रविवार

**प्रवेश शोभायात्रा प्रातः 8.00 बजे राजस्थान भवन [कांग्रेस कमिटी] से मणिधारी भवन जायेगी।**

**निवेदक**

## श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी संघ

मणिधारी भवन, श्रीपाद नगर, इचलकरंजी (महा.)

| अरुणकुमार म. ललवाणी | बाबुलाल मेहता | शिवलाल ललवानी | मदन संघवी |
|---|---|---|---|
| अध्यक्ष | उपाध्यक्ष | सचिव | कोषाध्यक्ष |
| 9326005831 | 9422046196 | 9422414208 | 9422583073 |

रेल्वे स्टेशन : इचलकरंजी से हातकणंगले–08 कि.मी., मिरज – 30 कि.मी.
एअरपोर्ट : इचलकरंजी से कोल्हापूर–30 कि.मी., पुणे–240 कि.मी., बेलगांव–110 कि.मी., मुंबई–400 कि.मी. पर है।

श्री विमलनाथाय स्वामिने नमः
अनन्तलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः
दादा श्री जिनदत्त-मणिधारीचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्र गुरुभ्यो नमः
गणनायक श्री सुखसागर गुरुभ्यो नमः

# श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट

## बसवनगुड़ी बैंगलोर के तत्वावधान में

**आज्ञा प्रदाता**
प.पू. गच्छाधिपति आचार्य
भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**पावन निश्रा**
कैवल्य धाम तीर्थ प्रेरिका, प्रवर्तिनी महोदया
प. पू. गुरुवर्या श्री निपुणाश्रीजी म.सा. की विदुषी सुशिष्याएं
प. पू. प्रवचन प्रभाविका

## गुरुवर्या श्री मंजुला श्री जी म.सा.

पूज्या गुरुवर्या श्री मृदुयशाश्रीजी म.सा., पूज्या गुरुवर्या श्री सम्यगनिधी श्रीजी म.सा.
ठाणा 3

## चातुर्मास आराधनार्थे मंगल प्रवेश के पुनीत अवसर पर

## आषाढ़ सुद 5, सोमवार दिनांक 4.07.2022

## सकल श्रीसंघों को आत्मीय आमंत्रण

**मंगलमय कार्यक्रम**

| | |
|---|---|
| प्रातः 8.30 बजे | श्री संभवनाथ जैन मन्दिर वी वी पुरम से गाजते-बाजते भव्य शोभा यात्रा |
| प्रातः 10.00 बजे | प. पू. गुरुवर्याश्री का मंगल प्रवेश एवं प्रसंगानुसार प्रवचन |
| प्रातः 11.30 बजे | सकल श्रीसंघ का स्वामीवात्सलय |

उपरोक्त कार्यक्रम में आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

विशेष सूचना : भोजनशाला में प्रतिदिन जैनियों के लिए सुबह-शाम में भोजन की सुन्दर व्यवस्था हैं।

प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीजी की 868वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 10 जुलाई 2022, रविवार को गुणानुवाद सभा का आयोजन प्रातः 9.30 बजे गुरुवर्याश्री की निश्रा में रखा गया है।

निवेदक **श्री जिन कुशल सूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट**

89/90, गोविन्दप्पा रोड़, बसवनगुड़ी, बैंगलोर-560 004 ( फोन : 080-22423548 )

॥ श्री शान्तिनाथाय नमः॥

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

## श्री बाड़मेर खरतरगच्छ संघ

# श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट मण्डल धोरीमन्ना में

**आज्ञा प्रदाता**

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**पावन निश्रा**

मारवाड़ ज्योति, खानदेश ज्योति, गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
प. पू. स्नेह सुरभि, खानदेश रत्ना पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
प. पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा., प. पू. साध्वी श्री श्रेयनंदिताश्रीजी म.सा. ठाणा 2

**चातुर्मासार्थ भव्य प्रवेश : 6 जुलाई 2022, बुधवार, प्रातः 8.30 बजे**

के प्रवेश के शुभ अवसर पर सकल संघ से पधारने का हार्दिक अनुरोध हैं।

लूणकरण मालू
अध्यक्ष
6377299012, 9414529082

गौतमचन्द डोसी
चातुर्मास कमेटी संयोजक
94130 29419

॥ श्री शान्तिनाथाय नमः॥

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

# श्री सांचोर (सत्यपुर) नगर की धन्य धरा पर भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश समारोह पर हार्दिक आमंत्रण

**आज्ञा प्रदाता** —प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**पावन निश्रा**

गच्छ गणिनी साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती
प. पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. सा. ,
प. पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 4

**शुभ प्रवेश : रविवार, दि. 10 जुलाई 2022, आषाढ़ सुदि 11**

निवेदक **श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ सांचोर**

कुशल भवन, सुनारों का वास, सांचोर-343 041 जिला- जालोर ( राज. )

सम्पर्क :
भूपेन्द्र कानूनगो
98190 33133

॥ श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः॥

॥ श्री जिनदत्त–मणिधारी–कुशल–चन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः॥

# चेन्नई के पुरुषवाक्कम के ताना स्ट्रीट में

# पू. गुरुवर्या श्रीजी का

## प्रथम बार भव्यातिभव्य चातुर्मास मंगल प्रवेश पर

## सकल श्री संघ को भावभरा आमंत्रण

**आज्ञा प्रदाता**

अंवती तीर्थोद्धारक

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

**पावन सन्निधि**

प. पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गच्छ गणिनी

**साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा.**

आदि ठाणा 5

**भव्य चातुर्मास मंगल प्रवेश**

**आषाढ सुदि 10, शनिवार दि. 9 जुलाई 2022**

चातुर्मास के विशिष्ट लाभार्थी

**श्रीमती मोहिनीदेवी समरथमलजी रांका परिवार**

उम्मेदाबाद (गोल) चेन्नई

**निवेदक**

श्री पुरुषादानीय पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ

नंबर 65–66, ताना स्ट्रीट, पुरसवाक्कम, चेन्नई 600 007

M. ललित कुमार वैद
अध्यक्ष
98401 36145

हरखचंद गोलछा
सचिव
98400 24006

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः॥ ॥ श्री महावीरस्वामिने नमः॥

अनंतलब्धि निधानाय गुरु गौतमस्वामिने नमः
खरतरविरुद धारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

# तिरुपातुर नगरे

## भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे भावभरा हार्दिक आत्मीय आमंत्रण

**मंगल पवेश**

**संवत् 2079 आषाढ़ सुदि 11, दिनांक 10 जुलाई 2022, रविवार**

**आज्ञा प्रदाता**
प.पू. गच्छाधिपति आचार्य
भगवंत श्री जिनमणिप्रभ
सूरीश्वरजी म.सा.

**पावन सान्निध्य**

पू. स्थविर मुनि **श्री मुक्तिप्रभसागरजी** म.सा.
पू. गणिवर्य **श्री मनीषप्रभसागरजी** म.सा.
पू. मुनि श्री मंथनप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनि श्री मतीशप्रभसागरजी म.सा. ठाणा 4

गच्छ गणिनी साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्याएं
प. पू. साध्वी श्री प्रितीसुधाश्रीजी म.सा., प. पू. साध्वी श्री प्रिय वर्षाजिनाश्रीजी म.सा.
प. पू. साध्वी श्री प्रिय कृतांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 3

**निवेदक**

## जैन श्री संघ तिरुपातुर

मांगीलाल वैद
अध्यक्ष
9443210149

पारसचन्द कवाड़
मंत्री
9443963930

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

# श्री जयपुर नगरे

# मोहनवाड़ी परिसर में

# चातुर्मास प्रवेश

**पावन निश्रा**

वि. सं. 2079, आषाढ़ सुदि 11,
रविवार, प्रातः 8.00 बजे

प्रवेश शुभ मुहूर्त
10 July 2022

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञा पुरुष आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य
पूज्य गुरुदेव अवंती तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर **श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा 9

**पावन सानिध्य**

पूजनीया प्रवर्त्तिनी महोदया श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या
पू. मरुधर ज्योति साध्वी रत्ना **श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा

**सकल श्रीसंघ को पधारने का हार्दिक अनुरोध है।**

निवेदक

## श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जयपुर

सम्पर्क सूत्र - मोहनबाड़ी धर्मशाला : 0141-2640123, शिवजीराम भवन : 0141-2563884, 4044572
देवेन्द्र मालू : 93145 11284, अनिल बैद : 93140 68348, राजीव भण्डारी : 8740002299 (वैयावच्च हेतु)

**श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,**
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फैक्स : 02973-256040, फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. चू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408